वर्ष: 6 अंक: 10

16-30 नवंबर, 2025 (नि:शुल्क)

न्यू इंडिया समाचार

विकसित भारत के सारथी

आज के बच्चे कल का भविष्य

विश्व बाल दिवस (20 नवंबर) विशेष : बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के साथ जुड़ा है विकसित भारत का सपना, केंद्र सरकार सींच रही है उन जड़ों को जो संवारेंगी राष्ट्र का कल...

ई-कॉपी के लिए QR स्कैन करें

भारत की अमर चेतना से जुड़ी है वंदेमातरम् की भावना

'मन की बात' देशवासियों से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सीधे संवाद का वह मंच है, जो देश की विविधता, ऊर्जा और सेवा भाव को एक सूत्र में पिरोता है। साथ ही लोगों को कुछ अच्छा करने की प्रेरणा भी देता है। इस कार्यक्रम के लिए लोग पीएम मोदी को ढेरों संदेश भेजते हैं, जिसमें वे प्रतिभाशाली लोगों के बारे में चर्चा करते हैं। 'मन की बात' के 127वें एपिसोड में पीएम मोदी ने कई मुद्दों पर विचार साझा किए। पढ़िए संपादित अंश...

- **माओवाद से ग्रस्त इलाकों में अब खुशियों के दीप :** इस बार उन इलाकों में भी खुशियों के दीप जलाए गए जहां कभी माओवादी आतंक का अंधेरा छाया रहता था। लोग उस माओवादी आतंक का जड़ से खात्मा चाहते हैं जिसने उनके बच्चों का भविष्य संकट में डाल दिया था।

- **सकारात्मक रुख :** त्योहारों के अवसर पर मैंने सभी के नाम एक पत्र लिखकर अपनी भावनाएं साझा की थी। मैंने अपने पत्र में खाने के तेल में 10 प्रतिशत की कमी करने का आग्रह किया था। इस पर लोगों ने बहुत सकारात्मक रुख दिखाया है।

- **भारतीय नस्ल के श्वान :** बीएसएफ और सीआरपीएफ ने अपने दस्तों में भारतीय नस्ल के श्वानों की संख्या बढ़ाई है। डॉग की ट्रेनिंग के लिए बीएसएफ का राष्ट्रीय प्रशिक्षण केंद्र ग्वालियर के टेकनपुर में है। बेंगलुरु में सीआरपीएफ के डॉग ब्रीडिंग एंड ट्रेनिंग स्कूल में मोंग्रेल्स, मुधोल हाउंड, कोम्बाई और पांडिकोना जैसे भारतीय श्वानों को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

- **सरदार पटेल का ऋणी है देश :** सरदार पटेल आधुनिक काल में राष्ट्र की सबसे महान विभूतियों में से एक रहे हैं। 'खेड़ा सत्याग्रह' से लेकर 'बोरसद सत्याग्रह' तक अनेक आंदोलनों में सरदार पटेल के योगदान को आज भी याद किया जाता है। अहमदाबाद नगर पालिका के प्रमुख के रूप में उनका कार्यकाल भी ऐतिहासिक रहा। गृहमंत्री और उप प्रधानमंत्री के रूप में उनके योगदान के लिए हम सभी सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

- **कॉफी की खेती :** ओडिशा की कोरापुट कॉफी का स्वाद गजब होता है। इसकी खेती भी लोगों को फायदा पहुंचा रही है। कोरापुट में कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो अपने जुनून की वजह से कॉफी की खेती कर रहे हैं। उनके जीवन में कॉफी से सुखद बदलाव हुआ है। उन्हें सम्मान और समृद्धि, दोनों हासिल हुई है।

- **'वंदेमातरम्' का उद्घोष :** राष्ट्र गीत यानी 'वंदेमातरम्'। एक ऐसा गीत, जिसका पहला शब्द ही हृदय में भावनाओं का उफान ला देता है। 'वंदेमातरम्' इस एक शब्द में कितने ही भाव हैं, कितनी ऊर्जाएं हैं। सहज भाव में यह हमें मां-भारती के वात्सल्य का अनुभव कराता है। 'वंदेमातरम्' का उद्घोष 140 करोड़ भारतीयों को एकता की ऊर्जा से भर देता है।

- **भारत में फूंके नए प्राण :** राष्ट्रभक्ति, मां-भारती से प्रेम, यह अगर शब्दों से परे की भावना है तो 'वंदेमातरम्' उस अमूर्त भावना को साकार स्वर देने वाला गीत है। इसकी रचना बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने सदियों की गुलामी से शिथिल हो चुके भारत में नए प्राण फूंकने के लिए की थी।

- **संस्कृत को नई प्राणवायु :** संस्कृत का नाम सुनते ही हमारे मन मस्तिष्क में आता है - हमारे 'धर्मग्रंथ', 'वेद', 'उपनिषद', 'पुराण', शास्त्र, प्राचीन ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म और दर्शन। एक समय इन सबके साथ-साथ संस्कृत बातचीत की भी भाषा थी। अब संस्कृति और सोशल मीडिया की दुनिया ने संस्कृत को नई प्राणवायु दी है।

- **कोमरम भीम को जानें :** अभी 22 अक्टूबर को महान विभूति कोमरम भीम की जन्म-जयंती मनाई गई है। कोमरम भीम की आयु बहुत लंबी नहीं रही। वे महज 40 वर्ष ही जीवित रहे, लेकिन अपने जीवन-काल में उन्होंने अनगिनत लोगों, विशेषकर आदिवासी समाज के हृदय में अमिट छाप छोड़ी। युवाओं से मेरा आग्रह है कि वे उनके बारे में अधिक से अधिक जानने का प्रयास करें।

'मन की बात' पूरी सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

11वां संविधान दिवस | 26 नंबवर 2025

लोकतंत्र की शक्ति जनता का संकल्प

संविधान ने जहां भारतीय लोकतंत्र के सामने आए आपातकाल जैसे खतरनाक समय का सामना किया, वहीं देश की हर जरूरत और उम्मीद को भी पूरा किया है। डॉ. भीमराव अंबेडकर द्वारा निर्मित संविधान में दी गई शक्ति के कारण ही आज देश का संविधान जम्मू-कश्मीर में भी लागू है। भारत परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण दौर से गुजर रहा है, ऐसे में संविधान मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में सही मार्ग दिखा रहा है। संविधान के इसी प्रकाश से अब भारत अपने भविष्य का मार्ग, बड़े सपनों और बड़े संकल्पों को हासिल करने में जुटा है क्योंकि आज प्रत्येक नागरिक का लक्ष्य है विकसित भारत का निर्माण...

“ हमारे संविधान की मूल प्रति में प्रभु श्रीराम, माता सीता, हनुमान जी, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, गुरु गोविंद सिंह जी... सभी के चित्र हैं। भारत की संस्कृति के प्रतीक... इन चित्रों को संविधान में इसलिए स्थान दिया गया ताकि वो हमें मानवीय मूल्यों के प्रति सजग करते रहें। ये मानवीय मूल्य... आज के भारत की नीतियों और निर्णयों के आधार हैं। - नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

न्यू इंडिया
समाचार

वर्ष: 6, अंक: 10 I 16-30 नवंबर, 2025

प्रधान संपादक
धीरेन्द्र ओझा
प्रधान महानिदेशक
पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

मुख्य सलाहकार संपादक
संतोष कुमार

सलाहकार संपादक
विभोर शर्मा

वरिष्ठ सहायक सलाहकार संपादक
पवन कुमार

सहायक सलाहकार संपादक
अखिलेश कुमार
चन्दन कुमार चौधरी

भाषा संपादन
सुमित कुमार (अंग्रेजी)
रजनीश मिश्रा (अंग्रेजी)
नदीम अहमद (उर्दू)

चीफ डिजाइनर
श्याम तिवारी

सीनियर डिजाइनर
फूलचंद तिवारी

डिजाइनर
अभय गुप्ता
सत्यम सिंह

13 भाषाओं में उपलब्ध न्यू इंडिया समाचार को पढ़ने के लिए क्लिक करें।

https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx

न्यू इंडिया समाचार के पुराने अंक पढ़ने के लिए क्लिक करें

https://newindiasamachar.pib.gov.in/archive.aspx

न्यू इंडिया समाचार के बारे में लगातार अपडेट के लिए फॉलो करें: @NISPIBIndia

अंदर के पन्नों पर...

आवरण कथा

विकसित भारत के सारथी
सशक्त बचपन समृद्ध भारत

बाल कल्याण का नया मार्ग

इस 20 नवंबर को विश्व बाल दिवस और विश्व बाल अधिकार दिवस के अवसर पर आइए जानते हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार कैसे बच्चों यानी भारत की जड़ों को सींचते हुए आने वाले भारत की नींव को दे रही है मजबूती... | 10-27

पीएम मोदी ने गोवा और कारवार के पश्चिमी तट पर देश के बहादुर नौसैनिकों के साथ आईएनएस विक्रांत पर मनाई दिवाली | 28-29

पीएम के उपहारों की ई-नीलामी

नीलामी के 7वें संस्करण से जुटाई गई राशि भी की गई नमामि गंगे परियोजना को समर्पित | 46-47

व्यक्तित्व : झलकारी बाई
1857 के स्वातंत्र्य समर में रानी लक्ष्मीबाई की रहीं अनन्य सहयोगी | 5

समाचार सार | 6-7

आसमान छूता भारत का आत्मविश्वास
राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने राफेल में उड़ान भर रचा इतिहास | 8

8वें वेतन आयोग के विचारार्थ विषयों को स्वीकृति
केंद्रीय मंत्रिमंडल ने कई महत्वपूर्ण प्रस्तावों को दी मंजूरी | 9

समुद्र से समृद्धि का रास्ता
इंडिया मैरीटाइम वीक 2025 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रखा भारत का विजन | 30-31

हर जरूरतमंद को घर... आवास भी, रोजगार भी
फ्लैगशिप स्कीम पीएम आवास योजना- ग्रामीण की 9वीं वर्षगांठ पर विशेष | 32-33

युवा सामर्थ्य ही सबसे बड़ी ताकत
रोजगार मेले में सौंपे गए 51 हजार से अधिक नियुक्ति पत्र | 34-35

एकता दिवस : राष्ट्र एक, संकल्प अटूट
सरदार पटेल की 150वीं जयंती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संबोधन | 36-37

छत्तीसगढ़ से भारत के विकास का घोष
छत्तीसगढ़ की स्थापना के रजत महोत्सव में पीएम मोदी ने दी सौगातें | 38-49

इतिहास की धारा को दी नई दिशा
सामाजिक सुधार-राष्ट्र निर्माण में अग्रणी आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष | 40-41

भारत में अब... ईज ऑफ डूइंग रिसर्च पर फोकस
उभरते विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी नवाचार सम्मेलन 2025 में पीएम का संबोधन | 42-43

भारत का विकास वैश्विक अवसरों को दे रहा आकार
एनडीटीवी वर्ल्ड समिट-2025 में पीएम मोदी का संबोधन | 44-45

500 गीगावाट से अधिक हुई स्थापित ऊर्जा क्षमता
स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में संभावनाओं के नए द्वार खोलती परमाणु ऊर्जा | 48

प्रकाशक और मुद्रक: कंचन प्रसाद, महानिदेशक, सीबीसी (केंद्रीय संचार ब्यूरो)। **मुद्रण:** जेके ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा. लि., बी-278, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज-1, नई दिल्ली-110020। **पत्राचार और ईमेल के लिए पता:** कमरा संख्या-1077, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली- 110003। **ईमेल-** response-nis@pib.gov.in आर. एन. आई. नंबर DELHIN/2020/78812

संपादक की कलम से...

सशक्त बचपन-समृद्ध भारत की पहल राष्ट्र को देगी नई ऊर्जा

सादर नमस्कार।

संस्कृत में एक श्लोक है - *यथा बीजं तथा फलम्।* जैसा बीज बोया जाता है, वैसा ही फल मिलता है। अर्थात्- बच्चों में जो संस्कार आज बोए जाएंगे, उनके स्वास्थ्य को जितनी प्राथमिकता दी जाएगी एवं उन्हें जैसी शिक्षा उपलब्ध कराई जाएगी, वही भविष्य में राष्ट्र का स्वरूप बनेंगे। यही दृष्टिकोण भारत की अमृत पीढ़ी को तैयार कर रहा है।

आज भारत सफलता की जिस ऊंचाई पर है, वह अभूतपूर्व है। पूरे विश्व में भारत की धाक जमी हुई है। वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने के संकल्प की सिद्धि की ओर अग्रसर है। आज भारत के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। राष्ट्र का बढ़ता हुआ सामर्थ्य, हर सेक्टर में नई संभावनाएं बना रहा है।

लेकिन विकसित भारत की इन सिद्धियों के वाहक कौन होंगे? निःसंदेह- आज के बच्चे। बच्चे राष्ट्र के गहने हैं, उसका भविष्य हैं। वह जैसे ज्ञान और संस्कार ग्रहण करेंगे, वैसा ही भारत का भविष्य बनेगा। अगर बच्चे स्वस्थ, शिक्षित होंगे, संस्कृति में रचे-बसे होंगे, विज्ञान में प्रवीण होंगे तो वे भारत को विकसित राष्ट्र के रूप में आगे ले जा सकते हैं। जिस प्रकार मजबूत इमारत के लिए नींव का ठोस होना जरूरी है उसी प्रकार शक्तिशाली नए भारत के लिए पोषित और स्वस्थ बचपन का होना भी जरूरी है।

केंद्र सरकार इसी सोच को साकार करते हुए नए भारत की पीढ़ी यानी जड़ों को सींचने में भी जुटी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का बच्चों के साथ आत्मीय लगाव कई अवसरों पर सार्वजनिक रूप से दिखता है। पोषण अभियान हो या फिर राष्ट्रीय शिक्षा नीति, अटल इनोवेशन मिशन हो या परीक्षा पे चर्चा, बचपन को सशक्त करने की उनकी पहल का परिणाम दिख रहा है। बेटियों की सुरक्षा, सम्मान एवं सशक्तीकरण के प्रति उनका विशेष ध्यान रहा है। बड़े गर्व के साथ उन्होंने कई बार कहा है कि बेटियां हर जगह अपना परचम लहरा रही हैं।

बीते 11 वर्षों में नीतियों, योजनाओं और अभियानों के जरिए बच्चों को नए भारत का स्वप्नदृष्टा बनाने और उसे ज्ञान-पराक्रम से युक्त कर भारत को प्रकाशमान करने के लिए की गई समुचित पहल ही इस बार विश्व बाल दिवस (20 नवंबर) के अवसर पर हमारी आवरण कथा बनी है।

इसके अलावा व्यक्तित्व की कड़ी में युद्ध नीति में निपुण वीरांगना झलकारी बाई, फ्लैगशिप के तहत 20 नवंबर को प्रधानमंत्री आवास योजना- ग्रामीण की 9वीं वर्षगांठ, केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय, प्रधानमंत्री को मिले उपहार और स्मृति चिन्हों की ई-नीलामी का 7वां संस्करण, रोजगार मेला सहित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पखवाड़े भर के कार्यक्रमों को इसमें शामिल किया गया है।

साथ ही, पत्रिका के इनसाइड पेज पर मन की बात और बैक कवर पर 24 नवंबर 2025 को वीर लाचित बरफुकन की 403वीं जयंती पर कृतज्ञ राष्ट्र का नमन पर विशेष सामग्री को समाहित किया गया है।

(धीरेन्द्र ओझा)

हिंदी, अंग्रेजी व अन्य 11 भाषाओं में उपलब्ध पत्रिका पढ़ें/डाउनलोड करें।
https://newindiasamachar.pib.gov.in/news.aspx

आपकी बात...

अत्यंत उपयोगी और अति उत्तम जानकारियों से भरपूर

न्यू इंडिया समाचार एक अत्यंत उपयोगी और अति उत्तम जानकारियों से भरपूर पत्रिका है। इसमें प्रकाशित सरकारी योजनाएं, समाज को बताने के लिए उपयोगी होती हैं। मैंने इस पत्रिका के बारे में लोगों को बताया और इसे पढ़ने को लेकर उनमें रुचि जगाई। मैं जिला परिषद 'बीड' में कृषि अधिकारी के पद पर कार्यरत हूं। इस पत्रिका में दी गई जानकारी मेरे संदर्भ के लिए भी काफी उपयोगी होती है।

nitinraut121@gmail.com

सरल और स्पष्ट भाषा... प्रामाणिक, विश्वसनीय और व्यापक कवरेज

वर्तमान में मैं विभिन्न सरकारी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहा हूं। इसमें सम-सामयिक घटनाओं, सरकारी नीतियों और सामाजिक-आर्थिक विकास के अपडेटेड ज्ञान से बहुत लाभ मिलता है। मुझे पता है कि न्यू इंडिया समाचार ऐसे विषयों पर सरल और स्पष्ट तरीके से प्रामाणिक, विश्वसनीय और व्यापक कवरेज करती है।

anjuranip79@gmail.com

बढ़ रहा मेरा ज्ञान, पहुंच सकती हूं लक्ष्य तक

मेरा नाम श्रीलक्ष्मी है। मैं सरकारी परीक्षाओं की तैयारी कर रही हूं। इसके लिए करंट अफेयर्स सेक्शन नियमित तौर पर पढ़ रही हूं। न्यू इंडिया समाचार के संस्करण सर्वश्रेष्ठ हैं। सबसे पहले मैंने यह पत्रिका अपने कार्यालय में पढ़ी थी। मैंने इसकी ई-प्रतियां डाउनलोड कर ली हैं। यह पत्रिका मेरा ज्ञान बढ़ा रही है जिससे मैं अपने लक्ष्य तक बेहतर तरीके से पहुंच सकती हूं।

msrilakshmi6699@gmail.com

सम-सामयिक जानकारी प्राप्त करने में मिल रही है मदद

न्यू इंडिया समाचार पत्रिका नियमित रूप से प्राप्त होने से न केवल मुझे सम-सामयिक जानकारी प्राप्त करने में मदद मिल रही है बल्कि मेरे ज्ञान, विश्लेषणात्मक कौशल में भी वृद्धि हो रही है। साथ ही इससे मुझे परीक्षा की तैयारी में भी सहायता मिल रही है। यह भारत सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाओं, सुधारों और पहलों को समझने के लिए एक मूल्यवान संसाधन के रूप में कार्य कर रही है।

mr.devkant@gmail.com

पत्राचार और ईमेल के लिए पता: कमरा संख्या-1077, सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, नई दिल्ली- 110003.
ईमेल- response-nis@pib.gov.in

आकाशवाणी समाचार Akashvani

न्यू इंडिया समाचार को आकाशवाणी के एफएम गोल्ड पर हर शनिवार-रविवार को दोपहर 3:10 से 3:25 बजे तक सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

झलकारी बाई अडिग साहस की प्रतीक

झलकारी बाई...भारत की सबसे सम्मानित महिला सैनिकों में से एक हैं, जिन्होंने 1857 के स्वातंत्र्य समर में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। झांसी की सेना में महिला शाखा दुर्गा दल की सेनापति रही झलकारी बाई शत्रु को गुमराह करने के लिए रानी के वेश में भी करती थीं युद्ध...

जन्म : 22 नवंबर, 1830, मृत्यु : 4 अप्रैल 1857

भारत और दुनिया में अपनी वीरता की परचम लहराने वाली झांसी की रानी यानी लक्ष्मीबाई को भला कौन नहीं जानता। वीरता के मामले में साक्षात दुर्गा का अवतार मानीं जाने वाली लक्ष्मीबाई ने अपनी वीरता से अंग्रेजों की नाक में दम ही नहीं किया, बल्कि उनकी सत्ता की नींव हिला कर रख दी थी। उनके सैन्य दल में एक महिला सैनिक थी जिसका नाम था झलकारी बाई। वह रानी लक्ष्मीबाई की महिला शाखा 'दुर्गा दल' की सेनापति भी थीं। उन्होंने प्रथम स्वाधीनता संग्राम में झांसी की रानी के साथ अद्भुत वीरता से लड़ते हुए ब्रिटिश सेना के कई हमलों को विफल किया था। कहा जाता है कि एक गरीब और दलित परिवार में जन्मीं, बहादुरी में सिंहनी के समान झलकारी बाई की कद-काठी और चेहरा बहुत हद तक लक्ष्मीबाई से मिलता-जुलता था। यही वजह है कि अंग्रेजों को चकमा देने के लिए उन्होंने कई बार रानी का भेष धरा और युद्ध के मैदान में उतरीं। अपने अंतिम समय में भी रानी के वेश में युद्ध करते हुए वह अंग्रेजों के हाथों पकड़ी गईं और लक्ष्मीबाई को किले से भाग निकलने का अवसर मिल गया। वह 4 अप्रैल 1857 को वीर गति को प्राप्त हुईं।

झलकारी बाई का जन्म 22 नवंबर, 1830 को झांसी के निकट भोजला गांव में हुआ था। वह बड़ी होकर एक सैनिक और रानी लक्ष्मीबाई की विश्वसनीय सलाहकारों में से एक बन गईं। अपनी बहादुरी के कारण वह रानी लक्ष्मीबाई की अच्छी सहेली बन गईं थीं ऐसा माना जाता है कि उन्होंने बहुत कम उम्र में ही घुड़सवारी, अस्त्र-शस्त्र की कला और एक योद्धा की तरह लड़ना सीख लिया। बाद में, उन्होंने तीरंदाजी, कुश्ती और निशानेबाजी भी सीखी।

भारत सरकार ने 22 जुलाई 2001 को झलकारी बाई के सम्मान में एक डाक टिकट जारी किया था। अंग्रेजों के दांत खट्टे करने वाली झलकारी बाई की गाथा आज भी बुंदेलखंड के लोगों के जेहन में जिंदा है और लोग बड़ी शिद्दत के साथ उन्हें याद करते हैं। उनकी गाथा आज भी लोककथाओं और लोकगीतों में गाई और सुनाई जाती है। अद्वितीय शौर्य, अदम्य साहस और अद्भुत पराक्रम का परिचय देने वाली झलकारी बाई का मातृभूमि के स्वाभिमान की रक्षा के लिए त्याग व समर्पण चिरकाल तक स्मरणीय रहेगा।

उत्तर प्रदेश के झांसी में 'राष्ट्र रक्षा समर्पण पर्व' में भाग लेते हुए 19 नवंबर 2021 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि यह धरती रानी लक्ष्मीबाई की अभिन्न सहयोगी रहीं वीरांगना झलकारी बाई की वीरता और सैन्य कौशल की साक्षी रही है। मैं 1857 के स्वाधीनता संग्राम की उस अमर वीरांगना के चरणों में आदरपूर्वक नमन करता हूं, अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। इतना ही नहीं, 15 अगस्त 2022 को 76वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से भी उन्होंने झलकारी बाई को याद कर नमन किया था।■

समाचार सार

वर्ष 2025 के राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कारों की घोषणा

प्रो. जयंत विष्णु नार्लीकर को मरणोपरांत विज्ञान रत्न

भारत के प्रसिद्ध खगोल भौतिक विज्ञानी प्रोफेसर जयंत नार्लीकर को मरणोपरांत वर्ष 2025 के विज्ञान रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। इसी वर्ष 20 मई को पुणे में उनका निधन हो गया था। प्रो. नार्लीकर को बिग बैंग सिद्धांत को चुनौती देने के लिए जाना जाता है। 25 अक्टूबर को राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार के तहत जारी सूची के साथ यह घोषणा की गई है। यह पुरस्कार विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार में विशेष योगदान के लिए चार श्रेणियों - विज्ञान रत्न, विज्ञान श्री, विज्ञान युवा-शांति स्वरूप भटनागर और विज्ञान टीम के अंतर्गत प्रदान किए जाते हैं। इस साल कुल 23 वैज्ञानिकों और एक टीम को सम्मानित किया जाएगा।

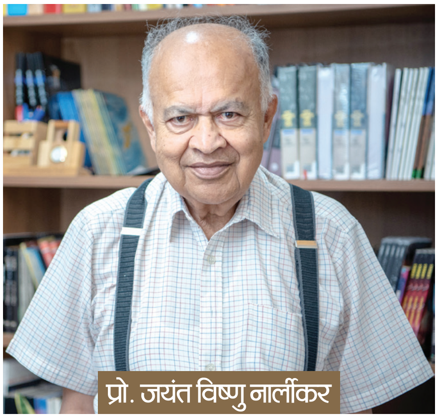
प्रो. जयंत विष्णु नार्लीकर

पुरस्कार विजेताओं के नाम

विज्ञान रत्न: प्रो. जयंत विष्णु नार्लीकर (भौतिकी) मरणोपरांत।

विज्ञान श्री: डॉ. ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह (कृषि विज्ञान), डॉ. यूसुफ मोहम्मद शेख (परमाणु ऊर्जा), डॉ. के. थंगराज (जैविक विज्ञान), प्रो. प्रदीप थलप्पिल (रसायन विज्ञान), प्रो. अनिरुद्ध भालचंद्र पंडित (इंजीनियरिंग विज्ञान), डॉ. एस. वेंकट मोहन (पर्यावरण विज्ञान), प्रो. महान एमजे (गणित और कंप्यूटर विज्ञान) और जयन एन (अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी)।

विज्ञान युवा-शांति स्वरूप भटनागर: डॉ. जगदीश गुप्ता कपुगंती (कृषि विज्ञान), डॉ. सतेंद्र कुमार मंगरौठिया (कृषि विज्ञान), देबार्का सेनगुप्ता (जैविक विज्ञान), डॉ. दीपा अगाशे (जैविक विज्ञान), डॉ. दिब्येंदु दास (रसायन विज्ञान), डॉ. वलीउर रहमान (पृथ्वी विज्ञान), प्रो. अर्कप्रवा बसु (इंजीनियरिंग विज्ञान), प्रो. सब्यसाची मुखर्जी (गणित और कंप्यूटर विज्ञान), प्रो. श्वेता प्रेम अग्रवाल (गणित और कंप्यूटर विज्ञान), डॉ. सुरेश कुमार (चिकित्सा), प्रो. अमित कुमार अग्रवाल (भौतिकी), प्रो. सुरहुद श्रीकांत मोरे (भौतिकी), अंकुर गर्ग (अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी) और प्रो. मोहन शंकर शिव प्रकाश (प्रौद्योगिकी एवं नवाचार)।

विज्ञान टीम: अरोमा मिशन सीएसआईआर (कृषि विज्ञान)।

15 हजार करोड़ रुपये से अधिक की लागत से दलहन-तिलहन खरीदेगी सरकार

दलहन और तिलहन क्षेत्र में किसानों की आय बढ़ाने के लिए केंद्र सरकार ने एक और बड़ा फैसला किया है। इसके तहत तेलंगाना, ओडिशा, महाराष्ट्र व मध्य प्रदेश से खरीफ सीजन 2025-26 के लिए दाल एवं तिलहन की खरीद की जाएगी। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 27 अक्टूबर को आयोजित बैठक में प्रधानमंत्री अन्नदाता आय संरक्षण अभियान (**PM-AASHA**) सहित कृषि एवं किसान कल्याण की योजनाओं के तहत इसकी मंजूरी दी। इसके लिए 15,095.83 करोड़ रुपये की राशि जारी की गई है, जिसका फायदा इन चारों राज्यों के लाखों को किसानों को होगा। सरकार ने तुअर, उड़द और मसूर की खरीद राज्य उत्पादन के 100 प्रतिशत तक करने की व्यवस्था की है।

'महिला क्रिकेट विश्व कप'

भारतीय टीम ने रचा इतिहास

भारत के क्रिकेट इतिहास में एक और गौरवशाली अध्याय जुड़ गया है। महिला टीम ने पहली बार आईसीसी महिला विश्व कप 2025 जीतकर भारत के गौरव को ऊंचाई पर पहुंचा दिया है। खिलाड़ियों के शानदार क्रिकेट कौशल ने लाखों लड़कियों के लिए प्रेरणा का मार्ग किया है प्रशस्त...

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने दक्षिण अफ्रीका को 52 रनों से हराकर महिला वनडे विश्व कप का खिताब अपने नाम कर लिया। नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम में खेले गए फाइनल मैच में टीम इंडिया ने विश्व चैंपियन बनकर इतिहास में नाम दर्ज कराया। यह महिला क्रिकेट के लिए एक बहुत बड़ा पल रहा क्योंकि भारत ने पहली बार कोई आईसीसी महिला विश्व कप टूर्नामेंट जीता है। यह जीत न सिर्फ खिलाड़ियों की मेहनत और जज्बे को दर्शाती है बल्कि हर एक खिलाड़ी की यात्रा, संघर्ष और साहस की कहानी को भी बयां करती है। हर भारतीयों को खुशियों से भर देने वाली यह जीत देश की बेटियों के प्रदर्शन, जुझारूपन और टीम भावना का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह ऐतिहासिक जीत अनगिनत लड़कियों को अपने सपनों को साकार करने के साथ ही देश को और गौरवान्वित करने के लिए प्रेरित करेगी।

> "आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप 2025 के फाइनल में भारतीय टीम की शानदार जीत। फाइनल में उनका प्रदर्शन अद्भुत कौशल और आत्मविश्वास से भरा रहा। टीम ने पूरे टूर्नामेंट में असाधारण टीम वर्क और दृढ़ता दिखाई। हमारी खिलाड़ियों को बधाई। यह ऐतिहासिक जीत भविष्य की चैंपियन खिलाड़ियों को खेलों में भाग लेने के लिए प्रेरित करेगी।
>
> - नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

भारत में 100 में से 99 पेमेंट अब डिजिटल, 85% यूपीआई से

भारत तेजी से कैशलेस इकोनॉमी की तरफ बढ़ रहा है। भारतीय रिजर्व बैंक की नई रिपोर्ट में यह बात सामने आई है कि 2024 में देश में जितने भुगतान किए गए उनमें से 99.7 फीसदी लेनदेन डिजिटल माध्यम से हुए। वहीं, राशि के हिसाब से यह आंकड़ा 97.5% रहा। यानी लोग अब कैश और चेक का इस्तेमाल बहुत कम कर रहे हैं।
रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2025 की पहली छमाही में कुल डिजिटल लेनदेन में 84.8% हिस्सेदारी यूपीआई की है। आरटीजीएस की 0.1 %, कार्ड की 2.7% और चेक से भुगतान की हिस्सेदारी 0.2% रही। हालांकि, रकम के हिसाब से 68.7 फीसदी राशि का भुगतान आरटीजीएस से किया गया। रिपोर्ट के अनुसार 2019 की पहली छमाही में डिजिटल ट्रांजैक्शन 1,424 करोड़ थे जो 2025 में बढ़कर 12,520 करोड़ हो गए। कुल लेनदेन में इसकी हिस्सेदारी 2019 के 96.7 फीसदी से बढ़कर 2025 में 99.8 फीसदी तक पहुंच गई है। इस दौरान यूपीआई ट्रांजैक्शन की संख्या 2019 में 441.6 करोड़ से बढ़कर 2025 में 10,637 करोड़ पहुंच गई है। राशि की बात करें तो यूपीआई से 2019 की पहली छमाही में 8 लाख करोड़ रुपये के लेनदेन हुए थे जो 2025 में बढ़कर 143 लाख करोड़ रुपये हो गए हैं। ■

राफेल में राष्ट्रपति की उड़ान

आसमान छूता भारत का आत्मविश्वास

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने 29 अक्टूबर को हरियाणा के अंबाला वायु सेना स्टेशन से राफेल लड़ाकू विमान में ऐतिहासिक उड़ान (Sortie) भर नया इतिहास रचा। इससे पहले वह 2023 में सुखोई 30 एमकेआई में भी उड़ान भर चुकीं हैं। ऐसा कर वे भारतीय वायु सेना के दो लड़ाकू विमानों में उड़ान भरने वाली देश की पहली राष्ट्रपति बनीं...

"शक्तिशाली राफेल विमान की पहली उड़ान ने मुझमें राष्ट्र की रक्षा क्षमताओं के प्रति गर्व की नई भावना पैदा की है।

-द्रौपदी मुर्मु, राष्ट्रपति

भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने अंबाला वायुसेना स्टेशन से शक्तिशाली राफेल लड़ाकू विमान में उड़ान भरकर राष्ट्र के गौरव में एक नया अध्याय जोड़ा है। यह उड़ान न केवल भारतीय वायुसेना की युद्धक क्षमता का परिचायक है, बल्कि भारत की आत्मनिर्भर रक्षा शक्ति और तकनीकी उत्कृष्टता का प्रतीक भी बना। राष्ट्रपति भारतीय सशस्त्र बलों की सर्वोच्च कमांडर हैं। उन्होंने लगभग 30 मिनट तक उड़ान भरी और करीब 200 किलोमीटर की दूरी तय की, उसके बाद वायु सेना स्टेशन लौट आईं। विमान को 17 स्क्वाड्रन के कमांडिंग ऑफिसर ग्रुप कैप्टन अमित गेहानी ने उड़ाया। राफेल ने समुद्र तल से लगभग 15 हजार फीट की ऊंचाई पर और लगभग 700 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से उड़ान भरी।

राष्ट्रपति की यह उड़ान हर भारतीय के हृदय में गर्व, प्रेरणा और विश्वास की नई भावना जगाती है। यह उस आत्मनिर्भर भारत की ओर संकेत है, जो न केवल रक्षा के क्षेत्र में बल्कि हर मोर्चे पर नई ऊंचाइयां छू रहा है।■

पूरा कार्यक्रम देखने के लिए **QR** कोड स्कैन करें।

केंद्रीय मंत्रिमंडल के निर्णय

8वें वेतन आयोग के विचारार्थ विषयों को स्वीकृति

रबी सीजन के लिए खाद सब्सिडी भी स्वीकृत

करीब 50 लाख कर्मचारियों और 69 लाख पेंशनभोगियों के लिए बड़ा कदम उठाते हुए मंत्रिमंडल ने 8वां केंद्रीय वेतन आयोग किन-किन विषयों पर विचार करेगा और सिफारिशें देगा, इसकी मंजूरी दे दी गई है। वहीं, अन्नदाताओं के हित में रबी सीजन के लिए उर्वरकों पर पोषक तत्व आधारित सब्सिडी दरों के प्रस्ताव को दी स्वीकृति...

निर्णय : 8वें केंद्रीय वेतन आयोग के नियम व संदर्भ को स्वीकृति।

प्रभाव : केंद्रीय कर्मियों और पेंशनभोगियों के लिए गठित वेतन आयोग अब किन-किन विषयों पर विचार करेगा और अपनी सिफारिशें सरकार को सौंपेगा, इसकी मंजूरी केंद्रीय मंत्रिमंडल ने दे दी है। जनवरी 2025 में 8वें वेतन आयोग को मंजूरी दी गई थी। आयोग की अध्यक्ष सुप्रीम कोर्ट की पूर्व न्यायाधीश जस्टिस रंजना प्रकाश देसाई होंगी। आईआईएम बैंगलोर के प्रोफेसर पुलक घोष अंशकालिक सदस्य और पेट्रोलियम मंत्रालय के सचिव पंकज जैन सदस्य सचिव होंगे। यह आयोग अस्थायी निकाय होगा और गठन की तिथि से 18 महीनों के भीतर अनुशंसाएं देगा। यदि आवश्यक हो तो आयोग अनुशंसाओं को अंतिम रूप दिए जाने पर किसी भी मामले पर अंतरिम रिपोर्ट भेजने पर विचार कर सकता है। बता दें कि आमतौर पर वेतन आयोगों की अनुशंसाएं प्रत्येक 10 वर्ष के अंतराल पर लागू की जाती हैं। इस हिसाब से 8वें केंद्रीय वेतन आयोग की सिफारिशों के सामान्यतः अगले वर्ष 1 जनवरी से लागू होने की उम्मीद है।

आयोग अनुशंसाएं देते समय कई बातों का रखेगा ध्यान

- देश की आर्थिक स्थिति और राजकोषीय अर्थात वित्तीय व्यवस्था का प्रबंध तथा खर्च और राजस्व के बीच संतुलन हो।
- विकास खर्च और कल्याणकारी उपायों के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हों।
- गैर-अंशदायी पेंशन योजनाओं की गैर-वित्त पोषित लागत।
- राज्य सरकारों की वित्तीय स्थिति पर अनुशंसाओं का संभावित प्रभाव जो आमतौर पर कुछ संशोधनों के साथ अनुशंसाओं को स्वीकार करते हैं।
- केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों और निजी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए उपलब्ध पारिश्रमिक स्ट्रक्चर, लाभ और कार्य स्थितियां।

निर्णय : रबी सीजन 2025-26 के लिए फॉस्फेटिक और पोटाशिक उर्वरकों पर पोषक तत्व आधारित सब्सिडी दरों को मंजूरी।

प्रभाव : डाई अमोनियम फॉस्फेट (डीएपी) और एनपीकेएस (नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटाश, सल्फर) ग्रेड सहित पीएंडके उर्वरकों पर सब्सिडी रबी सीजन 2025-26 के लिए अनुमोदित दरों के आधार पर प्रदान की जाएगी। इसके लिए अनुमानित बजटीय आवश्यकता लगभग 37,952.29 करोड़ रुपये होगी। यह खरीफ सीजन के मुकाबले लगभग 736 करोड़ रुपये अधिक है।

फायदे

- किसानों को सब्सिडीयुक्त, किफायती और उचित मूल्य पर उर्वरकों की उपलब्धता सुनिश्चित करता है।
- उर्वरकों की अंतरराष्ट्रीय कीमतों में हाल के कीमतों को देखते हुए पीएंडके उर्वरकों पर सब्सिडी को युक्तिसंगत बनाया गया है।

कैबिनेट के फैसलों पर प्रेस ब्रीफिंग देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

विकसित भारत के सारथी
सशक्त बचपन
समृद्ध भारत
बाल कल्याण का नया मार्ग

॥ गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे ॥

विष्णु-पुराण में उल्लिखित इस श्लोक का अर्थ है- देवता भी यही गान करते हैं कि जिसने इस भारत भूमि में जन्म लिया है, वह मनुष्य, देवताओं से भी अधिक सौभाग्यशाली है। ऐसे में भारत का प्रत्येक बच्चा उज्ज्वल भारत का सपना है। इन नन्हीं आंखों में जो चमक है, वही आने वाले कल का प्रकाश है। वर्ष 2047 तक राष्ट्र विकसित भारत के संकल्प की सिद्धि की ओर अग्रसर है तो उस नए भारत के सारथी बनेंगे आज के बच्चे। इसलिए जड़ों को सींचने के लिए केंद्र सरकार बच्चों के सर्वांगीण विकास- शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा को केंद्र में रखकर नई योजनाएं-नीतियों को आकार दे रही है। ताकि प्रत्येक बच्चे को मिले बेहतर भविष्य का अवसर और वह बने सशक्त और आत्मनिर्भर नागरिक...

इस 20 नवंबर को विश्व बाल दिवस और विश्व बाल अधिकार दिवस के अवसर पर आइए जानते हैं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार कैसे बच्चों यानी भारत की जड़ों को सींचते हुए आने वाले भारत की नींव को मजबूती दे रही है।

आप एक दोस्त के साथ बात कर रहे हैं, किसी प्रधानमंत्री से नहीं।

आज मैं प्रधानमंत्री के तौर पर नहीं, आपके परिवार के एक सदस्य के तौर पर आपसे बात कर रहा हूं। आज आप सभी बच्चों के बीच आकर मुझे बहुत सुकून मिला है।

वर्ष 2023 में क्रिसमस के अवसर पर प्रधानमंत्री आवास पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस आयोजन में बच्चों को 7, लोक कल्याण मार्ग स्थित प्रधानमंत्री के आधिकारिक आवास को करीब से देखने और जानने का एक अनूठा एवं ज्ञानवर्धक अवसर मिला। प्रधानमंत्री मोदी ने बच्चों से बात की और पूछा कि क्या उन्हें कभी पहले पीएम के आधिकारिक आवास का दौरा करने का मौका मिला है। सभी ने 'नहीं' में जवाब दिया तो पीएम मोदी ने मुस्कुराते हुए तुरंत कहा कि उनकी टीम उन्हें प्रधानमंत्री आवास का विशेष दौरा कराएगी। बच्चों की इस यात्रा पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा, "जिज्ञासु नन्हे मेहमानों ने 7, लोक कल्याण मार्ग का दौरा करते हुए निश्चित रूप से एक शानदार अनुभव हासिल किया है। उनकी खुशी और सराहना देखकर लगता है कि मेरा ऑफिस उनकी अपेक्षाओं की कठिन परीक्षा में सफल रहा है।"

एक छोटा बालक चित्र बनाकर लाया है, कब से खड़ा है उसके हाथ दुखते होंगे, कोई जरा इसको कलेक्ट करे, छोटा सा बालक है, शाबाश बेटे। चलो बेटा तुम्हारा चित्र मिल गया है, रोने की जरूरत नहीं है बेटा। अगर तुम्हारा एड्रेस उसमें लिखा होगा, तो मैं तुम्हें जरूर चिट्ठी लिखूंगा। साथियों, ये छोटे-छोटे बच्चों का प्यार, जीवन में इससे बड़ी पूंजी क्या हो सकती है?

बच्चों के साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का इस तरह का आत्मीय लगाव कई अवसरों पर दिखता है। जब भी बच्चों के साथ उन्हें समय बिताने का अवसर मिला है वे बच्चों की बातों में इतने मगन हो जाते हैं कि उनके मित्र बनकर सहजता से बात करते हैं। अक्सर बच्चों के साथ मस्ती-मजाक करते भी दिखते हैं। बच्चों के साथ जल्द घुल मिल जाते हैं। दो वर्ष पूर्व उन्होंने एक वीडियो साझा किया था, जिसमें वह दो बच्चों के साथ खेलते दिखे थे। दोनों बच्चों का सिर पकड़कर एक दूसरे से लड़ाते हुए खेल रहे थे। उनके माथे पर सिक्का चिपका रहे थे। माथे पर सिक्का चिपकाने की ट्रिक बच्चों को सिखा रहे थे। पीएम मोदी ने इस वीडियो के साथ लिखा था- बच्चों के साथ गुजारे कुछ यादगार पल। बीते 11 वर्षों में बच्चों के साथ प्रधानमंत्री मोदी की सहजता, कभी राखी बंधवाते हुए तो कभी बाल वाटिका में बच्चों के साथ बालपन वाला संवाद और परीक्षा पे चर्चा के दौरान भी देखी गई है। यह सभी इस बात का द्योतक है कि देश का नेतृत्व भावी पीढ़ी की जड़ों को सींचने के लिए किस तरह से काम कर रहा है। कभी बच्चों की प्रतिभा को सोशल मीडिया पर साझा करना, पत्र लिखना, नौनिहालों के साथ बचपन को जीना, बच्चों के साथ विशेष जुड़ाव यह सिद्ध करता है कि भारत के भविष्य का उन्हें कितना ख्याल है।

दरअसल, हर किसी को बालक जैसा बन जाना पसंद है। बालक के रूप में जो निर्दोषता और ऊर्जा का अनुभव होता है, वह अनोखा है। उसकी बराबरी नहीं की जा सकती। ईश्वर ने बालकों को एक विशिष्ट शक्ति दी है। बालकों में अहम नहीं होता और इसलिए ही बालकों को अपनी भूल सुधार करने में खास तकलीफ नहीं होती। बाल मन बिलकुल कच्चे घड़े जैसा होता है, जिसे जैसी दिशा मिलती है, वह वैसा आकार ले लेता है। ऐसे में बचपन को राष्ट्र की

आंगनवाड़ी केंद्र
तैयार की जा रही है भविष्य की बुनियाद

- आंगनवाड़ी में 6 माह से 6 साल तक के बच्चों को पौष्टिक आहार के साथ 3 से 6 साल के बच्चों को शिक्षा भी दी जा रही है।
- करीब 14 लाख आंगनवाड़ी सेविका, करीब 12 लाख हेल्पर की मदद से कुल 7,075 प्रोजेक्ट चलाए जा रहे हैं।
- यहां एलईडी स्क्रीन, आरओ वाटर प्यूरीफायर, स्मार्ट लर्निंग से लेकर बच्चों के केयर के लिए मैटेरियल, ऑडियो-विजुअल टूल्स, बच्चों के लर्निंग के लिए फ्रेंडली इक्यूपमेंट और पोषण वाटिका आदि की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

18 सितंबर 2025 तक 75,642 आंगनवाड़ी केंद्र को अपग्रेड करके सक्षम आंगनवाड़ी बनाया गया है।

वित्त वर्ष 2025-26 में दो लाख आंगनवाड़ी केंद्र को अपग्रेड करके सक्षम आंगनवाड़ी बनाने का लक्ष्य है।

आंगनवाड़ी पर उपलब्ध सुविधा

10,75,063 केंद्र पर शौचालय और

पोषण व पीएमएमवाई के लिए नवंबर 2025 से नया हेल्पलाइन नंबर

1515 जारी किया जो मौजूदा नंबर 14408 की जगह लेगा।

9,48,561
केंद्र पर किचन तैयार किया गया है।

9,16,505
केंद्र पर इलेक्ट्रिसिटी की स्थायी और 76,844 केंद्र पर सोलर सिस्टम से बिजली की व्यवस्था की गई है।

12,80,217
केंद्र पर पेयजल की सुविधा। 9.67 लाख केंद्रों पर नल से जल।

पूंजी मानकर पोषित करने की दूरदृष्टि ने बच्चों को शिक्षा-कौशल, सुरक्षा, स्वास्थ्य, पोषण के नए अवसर प्रदान किए हैं।

बच्चों को सही दिशा देने, उन्हें मानसिक रूप से मजबूत बनाने एवं जीवन के बड़े लक्ष्यों के प्रति प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए प्रधानमंत्री मोदी स्वयं तत्पर रहते हैं। परीक्षा पे चर्चा के दौरान उनकी आत्मीयता के साथ घंटों की चर्चा नई ऊर्जा का संचार करती है। आज शिक्षा-खेलकूद से लेकर स्वास्थ्य तक केंद्र सरकार बच्चों के साथ खड़ी है। आज भारत के बच्चों की प्रतिभा दुनिया को अचंभित करती है और उन्हीं बच्चों की ऊर्जा राष्ट्र को नई दिशा दे रही है। प्रधानमंत्री के बच्चों के साथ लगाव ने नीतियों-योजनाओं को पुख्ता बनाया है। मातृ-शिशु को सुरक्षित रखने के लिए पोषण अभियान से लेकर संस्थागत प्रसव को बढ़ावा दिया गया है। बच्चों के टीकाकरण के लिए मिशन इंद्रधनुष का कवच तैयार है। केंद्र सरकार की पहल का ही परिणाम है कि स्कूली शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार हुआ है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बनी है। खेल के मैदान से लेकर अनुसंधान तक, बिजनेस और स्टार्टअप से लेकर नौकरी व स्वरोजगार तक, कदम-कदम पर केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाएं बच्चों के साथ है।

बच्चे कल के विकसित भारत के वाहक

एक ओर मां होती है जो अपने बच्चे को सभी खुशियां और सुविधाएं देना चाहती है। अब राष्ट्र भी देश के बचपन और उसके जीवन को निरंतर पोषित करने में जुटा है। भारत का प्रत्येक बच्चा एक कहानी है- सपनों की, जिज्ञासा की और भविष्य की। इन नन्हीं आंखों में चमकती उम्मीद, कल के भारत की पहचान है। भारत आज एक ऐतिहासिक परिवर्तनकारी सुधार के दौर से गुजर रहा है। स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर वर्ष 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का जो संकल्प प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के सामने रखा है, वह केवल एक लक्ष्य नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक है। यह वह सपना है जिसमें भारत आत्मनिर्भर, समृद्ध, सशक्त और सर्वसमावेशी विकास का प्रतीक बनकर उभरे। इस सपने को साकार

जीवन का सुरक्षा चक्र

जन्म के पहले और जन्म के बाद भी

- गर्भधारण से लेकर करीब 2 वर्ष (पहले 1 हजार दिन) की उम्र तक के बच्चे को प्राथमिकता देते हुए, पोषण अभियान, कुपोषण के पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आ रहे चक्र को तोड़ने का प्रयास करता है। गरीबी और लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याओं से निपटने में भी मददगार है।
- हर साल सितंबर में मनाया जाने वाला पोषण माह **#Local4Poshan** जैसे अभियानों के जरिए बच्चों में बौनेपन, कुपोषण, एनीमिया और जन्म के समय कम वजन की समस्याओं को दूर करने में कारगर है।
- पोषण अभियान सिर्फ कम वजन वाले बच्चों के लिए नहीं है, बल्कि यह ज्यादा वजन वाले बच्चों को लेकर भी है। भारत कुपोषण के खिलाफ लड़ाई लड़ रहा है।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस)-5 (2019-21) के अनुसार

राष्ट्रीय स्तर पर 5 वर्ष से कम आयु के अधिक वजन वाले बच्चों का प्रतिशत

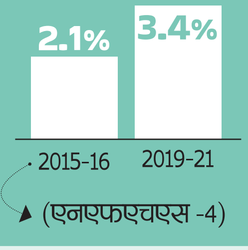

72.22

लाख से अधिक गर्भवती लाभार्थी के रूप में पंजीकृत हैं मिशन पोषण 2.0 के तहत जुलाई 2025 तक।

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना

4.05 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को जुलाई, 2025 तक मातृत्व लाभ प्रदान किया गया।

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान में हर महीने की 9 तारीख को गर्भवती महिलाओं की चिकित्सक द्वारा एक निश्चित दिन, निःशुल्क सुनिश्चित और गुणवत्तापूर्ण प्रसवपूर्व जांच की जाती है।

- आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति (सीसीईए) ने 2021-22 से 2025-26 तक पीएम पोषण योजना को जारी रखने की मंजूरी दी है। मिड डे मील का लाभ सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में कक्षा 1 से 8 तक के सभी छात्रों को दिया जाता है।
- इस योजना से देश भर के 11.20 लाख स्कूलों में पढ़ने वाले लगभग 11.80 करोड़ बच्चे लाभान्वित हो सकेंगे। वर्तमान में, पोषण ट्रैकर पर 14,02,248 आंगनवाड़ी केंद्र और 9,14,75,640 पात्र लाभार्थी पंजीकृत हैं और यह संख्या हर दिन लगातार बढ़ रही है।
- कुपोषण से निपटने के लिए 26 दिसंबर 2024 को सुपोषित पंचायत योजना की शुरुआत हुई।

एक अभिभावक की तरह मार्गदर्शन करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

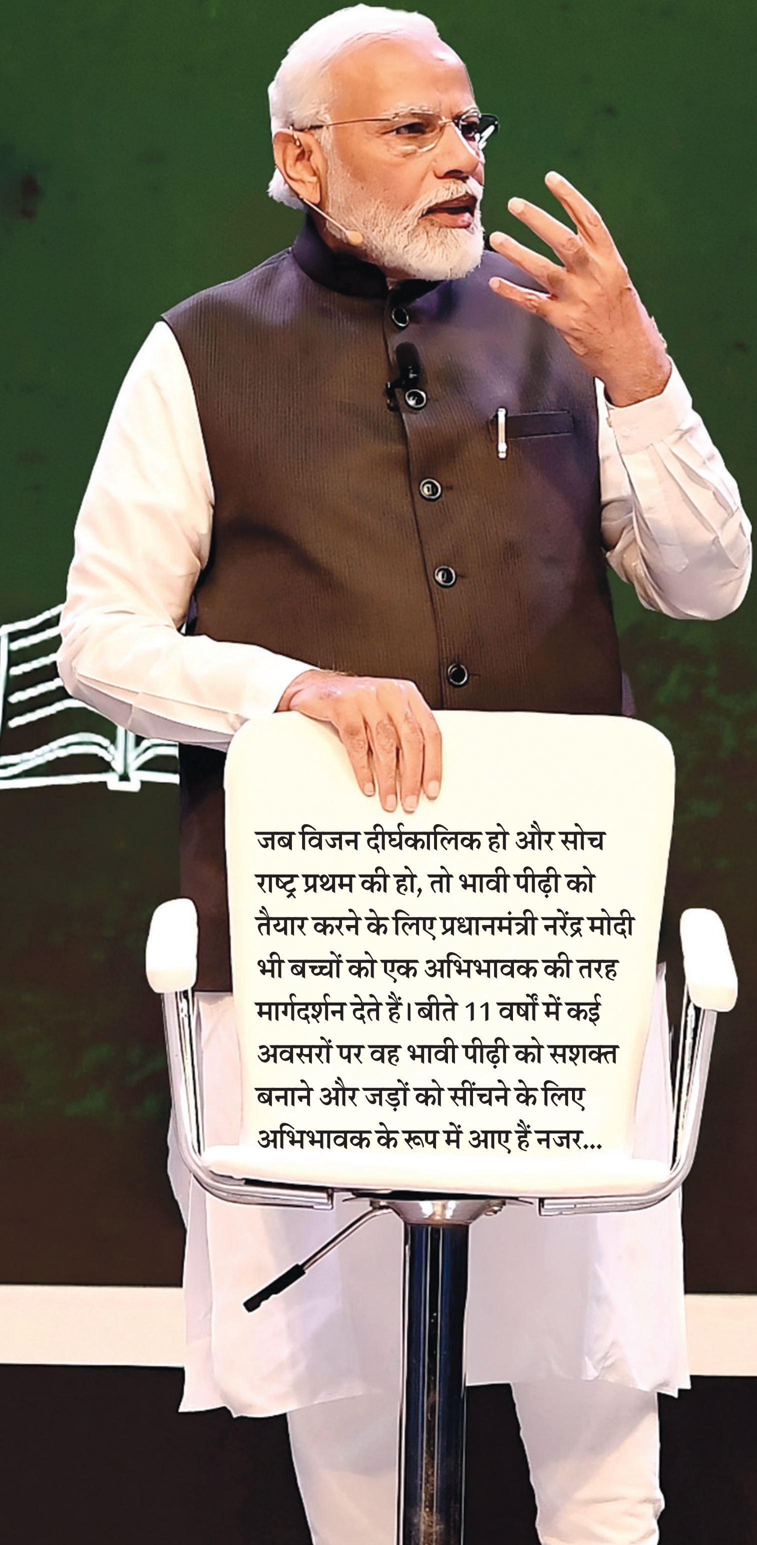

जब विजन दीर्घकालिक हो और सोच राष्ट्र प्रथम की हो, तो भावी पीढ़ी को तैयार करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी बच्चों को एक अभिभावक की तरह मार्गदर्शन देते हैं। बीते 11 वर्षों में कई अवसरों पर वह भावी पीढ़ी को सशक्त बनाने और जड़ों को सींचने के लिए अभिभावक के रूप में आए हैं नजर...

पोषण से फलने-फूलने तक

बच्चों को मौसमी फल खाना चाहिए, साथ ही जंक फूड, तैलीय भोजन और मैदे से बने खाद्य पदार्थों से परहेज करना चाहिए। भोजन को सही तरीके से खाने और निगलने से पहले कम से कम 32 बार चबाना चाहिए। बच्चों को पानी पीते समय छोटे-छोटे घूंट और उसका स्वाद लेना चाहिए।

कब, क्या और कैसे खाएं

मानव शरीर के लिए सूर्य के प्रकाश का विशेष महत्व है। बच्चों को रोजाना कुछ मिनट सुबह की धूप में रहने की आदत डालनी चाहिए। सूर्योदय के तुरंत बाद किसी पेड़ के नीचे खड़े होकर गहरी सांस लेनी चाहिए। जीवन में प्रगति के लिए पोषण का महत्व इस बात में निहित है कि व्यक्ति क्या, कब, कैसे और क्यों खाता है।

दबाव पर काबू पाना

समाज में यह धारणा घर कर गई है कि परीक्षाओं में अच्छे अंक न लाना जीवन बर्बाद करने जैसा है। क्रिकेट मैच में बल्लेबाज की गेंद पर एकाग्रता का उदाहरण देते हुए, पीएम मोदी कहते हैं कि बच्चों को बल्लेबाज की तरह बाहरी दबाव से बचने के साथ केवल पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। परीक्षाएं जीवन में सब कुछ नहीं हैं। किताबें पढ़नी चाहिए, लेकिन जितना संभव हो उतना ज्ञान प्राप्त करने पर फोकस करना चाहिए।

खुद को चुनौती दो

आत्म चिंतन करें, खुद से पूछें कि क्या बन सकते हैं, क्या हासिल कर सकते हैं और कौन से कार्य संतुष्टि प्रदान करेंगे। आत्मविश्वास बढ़ाने और उपलब्धि की भावना का आनंद लेने के लिए 10 किलोमीटर साइकिल चलाने जैसे छोटे-छोटे लक्ष्यों के साथ खुद को चुनौती दें। आत्म-प्रतिस्पर्धा से अटूट आत्मविश्वास बढ़ता है जबकि दूसरों से अपनी तुलना करने से निराशा हो सकती है।

सकारात्मकता खोजना

दूसरों के अच्छे गुणों, जैसे अच्छा गाना या साफ-सुथरे कपड़े पहनना, इन सकारात्मक गुणों पर चर्चा करनी चाहिए। यह तरीका सच्ची रुचि दर्शाता है और आपसी तालमेल बढ़ाता है। लेखन की आदत विकसित करें क्योंकि जो लोग लेखन की आदत विकसित करते हैं, वे अपने विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर पाते हैं।

नेतृत्व की कला

नेता वह होता है जो दूसरों के लिए एक उदाहरण स्थापित करके नेतृत्व करता है। इसके लिए स्वयं में परिवर्तन लाना होगा और व्यवहार में यह प्रतिबिंबित भी होना चाहिए। नेतृत्व थोपा नहीं जाता, बल्कि आपके आसपास के लोगों द्वारा स्वीकार किया जाता है।

किताबों से परे 360 डिग्री विकास

छात्र रोबोट नहीं हैं। शिक्षा केवल अगली कक्षा में आगे बढ़ने के लिए नहीं, बल्कि समग्र व्यक्तिगत विकास के लिए है। शुरुआती स्कूली शिक्षा से बागवानी जैसे पाठ अप्रासंगिक लग सकते हैं, लेकिन वे समग्र विकास में योगदान करते हैं।

ईंधन के रूप में विफलता

यदि 30-40% छात्र 10वीं या 12वीं कक्षा में अनुत्तीर्ण भी हो जाएं, तो भी जीवन समाप्त नहीं हो जाता। असफलताओं को अपना शिक्षक बनाएं। जैसे क्रिकेट में खिलाड़ी अपनी गलतियों की समीक्षा करते हैं।

विशिष्टता खोजें

एक बच्चे को ध्यान न देने के कारण स्कूल से निकाला जाने वाला था, लेकिन उसने एक टिंकरिंग लैब में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और रोबोटिक्स प्रतियोगिता जीतकर अनूठी खूबियों का प्रदर्शन किया। इन्हें पहचानना और उन्हें निखारना शिक्षक की भूमिका है।

समय-जीवन पर हो नियंत्रण

समय का ध्यान रखें, विशिष्ट कार्य निर्धारित करें और प्रतिदिन प्रगति की समीक्षा करें। चुनौतीपूर्ण विषयों से बचने की बजाय उन पर ध्यान केंद्रित करें, सबसे पहले उस विषय को चुनें जो आपको कठिन लगे और उसका डटकर सामना करें।

वर्तमान में रहना

सबसे मूल्यवान चीज वर्तमान क्षण है। एक बार यह बीत जाए, तो चला जाता है, लेकिन अगर इसे पूरी तरह से जिया जाए, तो यह जीवन का एक हिस्सा बन जाता है।

साझा करने की शक्ति

अवसाद की समस्या अक्सर परिवार से अलगाव और धीरे-धीरे सामाजिक मेलजोल से दूर होने से शुरू होती है। आंतरिक दुविधाओं को बढ़ने से रोकने के लिए खुलकर अपनी बात व्यक्त करनी चाहिए। परिवार के सदस्यों के साथ खुला संवाद दबाव कम करने वाले वाल्व की तरह काम करता है।

अपनी रुचियों का पालन करें

अपने बच्चों को हर जगह आदर्श के रूप में पेश न करें, बल्कि उनकी खूबियों को प्यार करें और स्वीकार करें। हर बच्चे में अनोखी प्रतिभा होती है। माता-पिता को अपने बच्चों की खूबियां पहचानने के साथ उन्हें निखारना चाहिए।

रोकें, प्रतिबिंबित करें, रीसेट करें

प्राणायाम जैसे श्वास व्यायाम एक अलग तरह की ऊर्जा उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे चिंता को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। पीएम मोदी ने दोनों नासिका छिद्रों से सांस लेने में संतुलन बनाने की एक तकनीक बताई, जिससे कुछ ही सेकंड में शरीर पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

35 करोड़ बच्चे देश में

यूनाइटेड नेशन पॉपुलेशन फंड (यूएनएफपीए) के अनुसार भारत में 0 से 14 आयु वर्ग की आबादी करीब 24 फीसदी है। अर्थात देश में करीब 35 करोड़ बच्चे हैं जिनकी उम्र 14 वर्ष तक की है।

पोषण भी पढ़ाई भी

- 10 मई 2023 को पोषण भी पढ़ाई भी कार्यक्रम लांच किया गया। इसका मकसद आंगनवाड़ी केंद्रों पर पौष्टिक आहार के साथ शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना था।
- कार्यक्रम के तहत दो पाठ्यक्रम की शुरुआत की गई नवचेतना और आधारशिला।

नवचेतना- जन्म से 3 वर्ष तक के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था प्रोत्साहन हेतु राष्ट्रीय कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के माध्यम से जीवन के पहले तीन वर्षों में मस्तिष्क के विकास और महत्व पर विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराई जाती है।

आधारशिला- 3 से 6 वर्ष तक के बच्चों के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। 3-6 वर्ष के सभी बच्चों के लिए प्रारंभिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार और सभी में सीखने के डोमेन एवं अन्य गतिविधियों को प्राथमिकता।

करने की असली ताकत और उसके वाहक हैं- आज के बच्चे, जो कल के भारत के निर्माता और सारथी बनेंगे। प्रधानमंत्री मोदी की सोच केवल वर्तमान तक सीमित नहीं है, वह एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ भारत की जड़ों को सींच रहे हैं। उनका मानना है कि अगर देश के बच्चों को सही दिशा, शिक्षा और अवसर दिए जाएं तो वह न केवल अपने जीवन को ऊंचाईयों तक ले जा सकते हैं, बल्कि समूचे राष्ट्र को भी नई दिशा दे सकते हैं। हर बच्चे में असीम ऊर्जा, कल्पनाशीलता और इनोवेशन की क्षमता होती है। यही क्षमता भारत को 21वीं सदी में ज्ञान और प्रौद्योगिकी की महाशक्ति बना सकती है।

सर्वविदित है कि जब भारत स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा, तब आज जो बच्चा 10 साल का है वह 32 वर्ष का होगा। यानी देश के नेतृत्व, इनोवेशन और उद्योग जगत की जिम्मेदारी इन्हीं के कंधों पर होगी। इसलिए प्रधानमंत्री मोदी की योजनाएं केवल आज की नहीं, बल्कि आने वाले 25 वर्षों की दूरदृष्टि पर आधारित हैं। यही वजह है कि हर मंच से वह यही संदेश देते हैं कि भारत के बच्चे आत्मनिर्भर बनें, अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखें

किशोरियों को कौशल प्रशिक्षण देकर बनाया जा रहा आत्मनिर्भर

- महिला और बाल विकास मंत्रालय द्वारा मिशन सक्षम आंगनवाड़ी के तहत 14 से 18 वर्ष की किशोरियों के लिए देश के 27 राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों के 218 जिलों में कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। पौष्टिक आहार दिए जाने के साथ-साथ प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के माध्यम से इनके कौशल को बढ़ाया जा रहा है। इसका मकसद है कि इन्हें रोजगार और स्वरोजगार के लिए तैयार किया जाए।
- 19 राज्यों के 27 जिलों में 14 से 18 वर्ष की किशोरियों के लिए स्पेशल पायलट स्किलिंग प्रोग्राम...

19 सितंबर 2025 तक कुल **6,263** किशोरियों को इसके लिए तैयार किया गया है।

'आंगनवाड़ी से स्कूल तक - एक परिसर, एक स्वप्न'

- एक ही परिसर में आंगनवाड़ी केंद्र और स्कूलों का एक ऐसा मॉडल जो प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) पर फोकस करता है। 2.9 लाख से ज्यादा आंगनवाड़ी केंद्र स्कूल परिसरों में स्थित है।

और वैश्विक नागरिक बनने की दिशा में कदम बढ़ाएं।

प्रधानमंत्री मोदी का बच्चों के प्रति विशेष लगाव हर किसी ने देखा है। वह हर अवसर पर यह संदेश देते हैं कि बच्चों के चेहरे की मुस्कान ही राष्ट्र की सच्ची ताकत है। वे बच्चों को देश की पूंजी और भविष्य के सारथी कहते हैं। प्रधानमंत्री मोदी का बच्चों से जुड़ाव केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि नीतिगत स्तर पर भी गहराई से जुड़ा हुआ है। इसी प्रयास में खिलौने के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता का अभियान एक बड़ा अवसर लेकर आया। आज खिलौना आत्मनिर्भरता का एक महत्वपूर्ण आधार बना है। भारत अब पारंपरिक खिलौने बनाकर बच्चों को परंपरा से भी जोड़ रहा है। आज भारत खिलौने का रिकॉर्ड निर्यात भी करने लगा है।

नन्हें मन के सपने हो रहे साकार

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत एक नए युग की दहलीज पर है। लेकिन इस युग का निर्माण किसी एक सरकार या नीति से नहीं, बल्कि उन करोड़ों नन्हें हाथों से होगा जो आज पेंसिल पकड़कर कल भारत की तकदीर लिखेंगे। बच्चों के प्रति प्रधानमंत्री मोदी का आत्मीय लगाव किसी से छिपा नहीं है। वह उन्हें देश का भविष्य ही नहीं, बल्कि वर्तमान का आधार भी मानते हैं। यही कारण है कि सरकार की हर बड़ी योजना में बच्चों का कल्याण, शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास प्रमुख रूप से जुड़ा हुआ है। चाहे वह पोषण अभियान हो, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ या फिर डिजिटल अभियान का वह स्वप्न जो प्रत्येक बच्चे को तकनीक से जोड़ता है।

भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए, बच्चों की जिंदगी सुधारना, यह सबका दायित्व है। इसके लिए बिखरी हुई सारी योजनाओं को एक साथ जोड़कर मिशन मोड में काम किया जा रहा है। चाहे पानी की समस्या हो, दवाइयों की समस्या हो या कद की, समग्र सोच के साथ पोषण अभियान चलाया जा रहा है। मिशन इंद्रधनुष के द्वारा टीकाकरण में तेजी आई है। मातृ वंदना योजना में माताओं को आर्थिक मदद, स्वच्छ भारत अभियान से शौचालयों का निर्माण, उज्ज्वला योजना के तहत रसोई गैस की सुविधा,

संयुक्त राष्ट्र विश्व बाल दिवस

- विश्व बाल दिवस की स्थापना सर्वप्रथम 1954 में सार्वभौमिक बाल दिवस के रूप में की गई थी। यह प्रत्येक वर्ष 20 नवंबर को अंतरराष्ट्रीय एकजुटता को बढ़ावा देने, विश्व भर में बच्चों के बीच जागरूकता लाने तथा उनके कल्याण में सुधार लाने के लिए मनाया जाता है।
- 20 नवंबर एक महत्वपूर्ण तारीख है क्योंकि इसी दिन 1959 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने बाल अधिकारों की घोषणा को अपनाया था। 1989 में इसी दिन संयुक्त राष्ट्र महासभा ने बाल अधिकारों पर कन्वेंशन भी अपनाया था। 1990 से विश्व बाल दिवस के दिन ही इनकी वर्षगांठ भी मनाई जाती है।

'कीर्ति' के जरिए खेल प्रतिभा की पहचान

खेलो इंडिया राइजिंग टैलेंट आइडेंटिफिकेशन (कीर्ति) 9 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों में खेल प्रतिभाओं की पहचान करने और उन्हें बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई पहल है।

- खेलो भारत नीति-2025 के तहत शिक्षा प्रणाली में खेलों को एकीकृत करके स्कूल और विश्वविद्यालय में ही युवा खेल प्रतिभाओं की पहचान और पोषण के व्यापक ढांचे को शामिल किया गया है। यह बचपन से ही शारीरिक साक्षरता को एक मुख्य घटक के रूप में स्वीकार करता है। यह आजीवन फिटनेस को बढ़ावा देने के राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुरूप है।

174 प्रतिभा मूल्यांकन केंद्र है देश में

बाल टीकाकरण अभियान...
ताकि बीमारियों से बचाया जा सके

- बच्चों को राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम के तहत 12 तरह की बीमारियों से बचाव के लिए मुफ्त टीके दिए जाते हैं।
- बच्चों और गर्भवती महिलाओं को टीका लगाने के लिए जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में साप्ताहिक आधार पर नियमित टीकाकरण सत्र आयोजित किए जाते हैं।
- कम टीकाकरण कवरेज वाले क्षेत्रों में व्यापक टीकाकरण कार्यक्रम के तहत विशेष कैच-अप टीकाकरण अभियान, गहन मिशन इंद्रधनुष चलाया गया ताकि छूटे हुए और टीकाकरण छोड़ चुके बच्चों का टीकाकरण किया जा सके।
- पल्स पोलियो कार्यक्रम के एक भाग के रूप में राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस जैसे विशेष टीकाकरण अभियान हर साल चलाए जाते हैं।
- वर्ष 2013 तक राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम में केवल 6 टीके थे जबकि वर्ष 2014 में छह नए टीके जोड़े गए।

इन बीमारियों से बचाव के लिए बच्चों को लगते हैं टीके

▪ हेपेटाइटिस बी वैक्सीन ▪ ओरल पोलियो वैक्सीन (ओपीवी) ▪ बैसिलस कैल्मेट-गुएरिन वैक्सीन (बीसीजी) ▪ पोलियो वैक्सीन इंजेक्शन (आईपीवी) ▪ पेंटावैलेंट वैक्सीन ▪ रोटावायरस वैक्सीन (आरवीवी)▪ न्यूमोकोकल कंजुगेट वैक्सीन (पीसीवी) ▪ खसरा और रूबेला वैक्सीन (एमआर) ▪ डिप्थीरिया पर्टुसिस टेटनस वैक्सीन (डीपीटी) ▪ टेटनस और वयस्क डिप्थीरिया वैक्सीन (टीडी) ▪ जापानी एन्सेफलाइटिस वैक्सीन (जेई)।

नल से स्वच्छ जल की सुविधा, देश को स्वस्थ बनाने की दिशा में बड़ा सामाजिक कदम है। इसे आगे बढ़ाते हुए देश को स्वस्थ बनाने का अभियान जारी है क्योंकि अगर देश के बच्चे सशक्त हो गए तो देश का भविष्य भी सशक्त होगा।

प्रधानमंत्री मोदी की यह दूरदृष्टि इस बात का प्रमाण है कि विकसित भारत का निर्माण केवल इमारतों या परियोजनाओं भर से नहीं होगा, बल्कि उन नन्हें मन से होगा जिनमें सपने देखने और उन्हें साकार करने की क्षमता है। आज के बच्चे ही कल के विकसित भारत के सारथी हैं क्योंकि उनके हाथों में ही होगी नई ऊर्जा, नई सोच और नए भारत की बागडोर। प्रधानमंत्री मोदी की यही प्रेरणा है कि हर बच्चा अपनी क्षमताओं पर विश्वास करे, बड़े सपने देखे और उन्हें पूरा करने का साहस रखे। इसी विश्वास के साथ भारत आज उस दिशा में कदम बढ़ा रहा है, जहां प्रत्येक बच्चा अपने सपनों का भारत बनाएगा और प्रत्येक सपना विकसित भारत की पहचान बनेगा।

बाल मृत्यु दर में आई कमी

संयुक्त राष्ट्र अंतर-एजेंसी समूह (यूएनआईजीएमई 2024 की रिपोर्ट) के अनुसार

5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर

78%

की गिरावट आई वर्ष 1990-2023 के बीच भारत में, जबकि वैश्विक स्तर पर यह गिरावट 61% थी।

नवजात मृत्यु दर में भी आई गिरावट

70%

की कमी आई इसी अवधि में। वहीं, वैश्विक स्तर पर यह गिरावट महज 54% रही।

शिशु और बाल मृत्यु दर

प्रति 1,000 जीवित बच्चों के जन्म पर

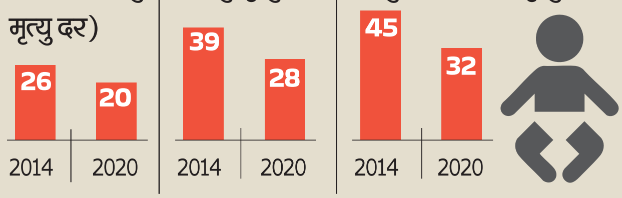

2.6 करोड़ बच्चों का हर साल यूनिवर्सल इम्यूनाइजेशन प्रोग्राम के तहत पूर्ण टीकाकरण किया जाता है।

94% बच्चों का पूर्ण टीकाकरण।

पालना

28,783 लाभार्थियों को इसका फायदा हुआ फरवरी 2025 तक।

इसका उद्देश्य बच्चों (6 महीने से 6 वर्ष की आयु तक) के लिए सुरक्षित और संरक्षित वातावरण में गुणवत्तापूर्ण क्रेच सुविधा, पोषण सहायता, बच्चों के स्वास्थ्य और विकास एवं टीकाकरण प्रदान करना है। पालना के तहत क्रेच सुविधाएं सभी माताओं को प्रदान की जाती हैं, चाहे उनकी रोजगार स्थिति कुछ भी हो।

चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर

मिशन वात्सल्य दिशा-निर्देश के अनुसार देश भर के 36 राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों में इमरजेंसी रेस्पांस सपोर्ट सिस्टम।

112 पर कॉल करके सहायता मांगी जा सकती है।

689 जिलों में काम कर रहा है यह फिलहाल।

शिक्षा- भविष्य की मजबूत नींव

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की रीढ़ होती है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस सच्चाई को गहराई से समझा और इसी सोच के साथ 2020 में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश को समर्पित की। यह नीति केवल किताबों और परीक्षाओं तक सीमित नहीं, बल्कि बच्चों के समग्र विकास का माध्यम है। इसमें रटने की बजाय समझने, सोचने और इनोवेशन को बढ़ावा दिया गया है। अब बच्चे

> “बच्चे तंदुरूस्त हों, वजन हो, ऊंचाई हो, इन सारे विषयों पर ध्यान देकर एक holistic approach के साथ... और पोषण के क्षेत्र में हम दुनिया के सामने गर्व के साथ कह सकें कि हमने achieve कर लिया है। ऐसे हंसते-खेलते बच्चे हर पल नजर आएं, ये स्थिति हमें पैदा करनी है।
>
> -नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

अपनी रुचि के अनुसार विषय चुन सकते हैं, प्रयोगों के माध्यम से सीख सकते हैं और डिजिटल प्लेटफॉर्मों का उपयोग कर दुनिया भर के ज्ञान से जुड़ सकते हैं। यह शिक्षा नीति भारत के बच्चों को केवल नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि इनोवेशन और रोजगार सृजन करने वाला नागरिक बना रही है। प्रधानमंत्री मोदी का विजन स्पष्ट है, "हर भारतीय बच्चा आत्मविश्वासी बने, अपनी जड़ों से जुड़ा रहे और विश्व पटल पर भारत का गौरव बढ़ाए।"

सिर्फ शिक्षा और ज्ञान का भंडार काफी नहीं है, हुनर भी होना चाहिए। अब इसको पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है, ताकि पूर्ण विकास के लिए उसको अवसर मिले। प्रारम्भिक शिक्षा में भी मातृ भाषा को प्रोत्साहित करने का काम शुरू हो चुका है। 'विद्या प्रवेश' प्रोग्राम की इसमें बहुत बड़ी भूमिका है। प्ले स्कूल की जो अवधारणा अभी तक बड़े शहरों तक ही सीमित थी, 'विद्या प्रवेश' के जरिए अब दूर-दराज के स्कूलों तक जा रही है। यानी, देश के किसी भी हिस्से में, बच्चा अमीर का हो या गरीब का, उसकी पढ़ाई खेलते और हंसते हुए ही होगी। जब शुरुआत मुस्कान के साथ होगी, तो आगे सफलता का मार्ग भी आसानी से ही पूरा होगा। आज देश में 3 लाख से ज्यादा बच्चे ऐसे हैं जिनको शिक्षा के लिए सांकेतिक भाषा की आवश्यकता पड़ती है। इसे समझते हुए भारतीय साइन लैंग्वेज को पहली बार एक भाषा विषय यानी एक विषय का दर्जा प्रदान किया गया। अब छात्र इसे एक भाषा के तौर पर भी पढ़ रहे हैं। इससे, विशेष रूप से दिव्यांग बच्चों को बहुत मदद मिल रही है।

स्वास्थ्य और पोषण: सशक्त राष्ट्र की आधारशिला

भगवत गीता में कहा गया है- युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु। युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥ अर्थात्, जिसका आहार, आचार और चाल संतुलित हो, जो नियम से सोता और जागता हो, ध्यान का रास्ता उसके सभी दुखों को समाप्त कर देता है। इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए बीते 11 वर्षों में केंद्र सरकार ने बच्चों को एक स्वस्थ जीवन देने के लिए माता और बच्चों के पोषण एवं उनके स्वास्थ्य पर बल दिया है।

सुरक्षित बचपन
बाल विवाह मुक्त भारत

महिला और बाल विकास मंत्रालय ने 27 नवंबर 2024 को राष्ट्रीय स्तर पर बाल विवाह मुक्त भारत अभियान की शुरुआत की। इस अवसर पर पोर्टल **http://stopchildmarriage.wcd.gov.in** लांच किया गया।

यौन शोषण से सुरक्षा

बच्चों के खिलाफ यौन अपराधों की रोकथाम के लिए 2012 में लागू प्रोटेक्शन फ्रॉम सेक्सुअल ऑफेंस एक्ट (पॉक्सो) को और सशक्त बनाने की दिशा में 2019 में महत्वपूर्ण संशोधन किए गए।

- गंभीर यौन अपराध के मामलों में फांसी तक की सजा का प्रावधान किया गया।
- कानून को लैंगिक रूप से तटस्थ बनाया गया, ताकि बालक और बालिका दोनों को समान सुरक्षा मिले।
- चाइल्ड पोर्नोग्राफी और डिजिटल माध्यमों पर अश्लील सामग्री साझा करने या छिपाने जैसे अपराधों के लिए कठोर दंड निर्धारित किए गए।
- यौन अपराधों से जुड़े मामलों में जल्दी न्याय के लिए विशेष और फास्ट ट्रैक न्यायालयों की संख्या बढ़ाई गई।

404
पॉक्सो अदालतों सहित 754 फास्ट ट्रैक अदालतें 30 राज्यों में कार्यरत हैं।

3.06 लाख
से अधिक मामलों का निपटारा किया गया जनवरी 2025 तक।

> देश में 3 लाख से ज्यादा बच्चों को सांकेतिक भाषा की आवश्यकता पड़ती है। लिहाजा भारतीय साइन लैंग्वेज को पहली बार एक भाषा 'विषय' का दर्जा दिया गया है। इससे भारतीय साइन लैंग्वेज को बहुत बढ़ावा मिलेगा, हमारे दिव्यांग साथियों को बहुत मदद मिलेगी।
>
> -नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

पोषण के लिए केंद्र सरकार ने समग्रता के साथ काम किया है। बचपन के इर्द-गिर्द एक मजबूत सुरक्षा घेरा बनाने का प्रयास किया गया है। सुरक्षा के इस घेरे के तीन पहलू हैं- खान-पान, टीकाकरण और स्वच्छता। स्वास्थ्य का सीधा संबंध पोषण से है, केवल पोषण अभियान को हर माता, हर शिशु तक पहुंचाया जाता है तो अनेक जीवन बच जाते हैं। इसी सोच के साथ केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय पोषण मिशन की शुरूआत की थी। इस मिशन की गंभीरता को देखते हुए प्रत्येक वर्ष सितंबर के महीने को पोषण के लिए ही समर्पित किया जाता है।

गुलामी के लंबे कालखंड के कारण, संसाधनों का अभाव रहा, गरीबी चरम पर पहुंची और लोगों को रोजी-रोटी के लिए संघर्ष करना पड़ा। इसका सबसे नकारात्मक प्रभाव बच्चों पर पड़ा। अब बदली परिस्थितियों में पोषण अभियान जैसे कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों को पौष्टिक भोजन मिले यह सुनिश्चित किया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मानना है कि जिस प्रकार मजबूत इमारत के लिए नींव का ठोस होना जरूरी है उसी प्रकार शक्तिशाली नए भारत के लिए पोषित और स्वस्थ बचपन का होना भी जरूरी है। यदि देश का बचपन कमजोर रहेगा तो उसके विकास

मजबूत जड़ें
प्री-प्राइमरी नामांकन में निरंतर वृद्धि

- 20 वर्षों में 6 से 14 आयु वर्ग के बच्चों का नामांकन वर्ष 2024 में 98.1% के साथ उच्चतम स्तर पर पहुंचा है।

3 से 5

आयु वर्ग के बच्चों में प्री-स्कूल स्तर पर नामांकन में सुधार हुआ है। यह 70 प्रतिशत से अधिक पहुंच गया है। यह सुनिश्चित करता है कि किसी न किसी प्रारूप में बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा सबके लिए सुलभ है।

13,076

स्कूलों का देशभर में पीएम श्री योजना के तहत किया गया चयन।

पीएम श्री स्कूल

पीएम श्री स्कूलों में स्मार्ट क्लास रूम, पुस्तकालय, इंटरनेट सुविधा, व्यवसायिक कौशल शिक्षा, पूर्ण रूप से सुसज्जित एकीकृत विज्ञान लैब, खेल मैदान, स्कूल नवाचार परिषद, मिशन लाइफ के लिए युवा और इको क्लब, प्राथमिक स्कूल के बच्चों के लिए बाला विशेषताएं, जादुई पिटारा, विद्यार्थियों के लिए 10 बैगलेस दिवस, बच्चों की उपस्थिति निगरानी के लिए चाइल्ड ट्रैकिंग सॉफ्टवेयर, हाथ धोने की सुविधा सहित शौचालय की व्यवस्था की जा रही है।

सांकेतिक भाषा को विषय का दर्जा

- आईएसएल को एकीकृत करने के लिए केंद्र सरकार काम कर रही है। कक्षा 1 से 12 तक की शिक्षण सामग्री में से कक्षा 1 से 7 तक की पाठ्यचर्या पुस्तकों को एनसीईआरटी ने आईएसएल में परिवर्तित भी कर दिया है।

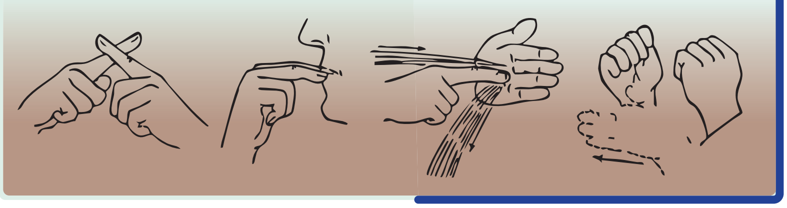

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
तैयार हो रही अमृत पीढ़ी

- छात्रों के समग्र विकास के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 शुरू की।
- एनईपी 2020 के तहत भारत में 3 वर्ष से 8 वर्ष आयु वाले बच्चों के लिए पहली बार एकीकृत पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार की गई।
- स्कूली शिक्षा के लिए (5+3+3+4) पाठ्यचर्या और शैक्षणिक संचरना यानी आधारभूत चरण में 5 वर्ष, प्रारंभिक और मध्य चरण में तीन-तीन वर्ष और माध्यमिक चरण में 4 वर्ष शामिल है।
- एनईपी 2020 में 2030 तक प्री-स्कूल से माध्यमिक स्तर तक शत प्रतिशत नामांकन अनुपात प्राप्त करने का लक्ष्य रखा गया है।
- एनईपी 2020 के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए समग्र शिक्षा की मौजूदा योजना को नया रूप देने के साथ ही उसमें कौशल शिक्षा से संबंधित नई पहलें शामिल की गई हैं।
- कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों के लिए व्यवसायिक शिक्षा की शुरुआत की गई है।
- सीबीएसई कक्षा 6 से 15 घंटे के कौशल मॉड्यूल के रूप में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कौशल प्रदान करता है।
- हब और स्पोक मॉडल की शुरुआत की गई है जिसमें हब स्कूलों में उपलब्ध बुनियादी ढांचे का उपयोग आसपास के स्कूलों के छात्रों द्वारा किया जाता है।
- एनईपी 2020 में सिफारिश की गई है कि कक्षा 6 से 8 के दौरान 10 दिवसीय बैगलेस अवधि में भाग लें, जहां बढ़ई, माली, कुम्हार, कलाकार आदि के साथ इंटर्न करें।

की गति धीमी हो जाएगी। अगर जन्म से पहले और जन्म के तुरंत बाद बच्चों के खाने-पीने पर ध्यान दिया जाए व बीमारियों से लड़ने की शक्ति को बढ़ाई जाए तो भविष्य में स्वास्थ्य को लेकर परेशानियां कम होंगी।

पोषण, स्वच्छता और टीकाकरण, ऐसा नहीं है कि पहले इस बारे में सोचा नहीं गया। इन तमाम पहलुओं को लेकर आजादी के बाद से ही अनेक कार्यक्रम चले हैं, लेकिन बहुत अधिक सफलता नहीं मिल पाई। जबकि कम संसाधनों वाले छोटे देश भी इस क्षेत्र में आगे निकल गए। इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए 2014 से केंद्र सरकार ने नई रणनीति के साथ काम करना शुरू किया। टीकाकरण के

- समग्र शिक्षा अभियान के आईसीटी और डिजिटल पहल के तहत कक्षा 6 से 12 तक के सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में राज्य व केंद्र शासित प्रदेशों की साझेदारी में आईसीटी प्रयोगशालाएं व स्मार्ट कक्षाएं स्थापित की जा रही हैं।
- **मातृ भाषा:** भारत सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्रावधान किया है कि जहां तक संभव हो, कम से कम 5वीं से 8वीं कक्षा तक शिक्षा का माध्यम गृह भाषा/मातृ भाषा या क्षेत्रीय भाषा में होगा।
- **एक भारत- श्रेष्ठ भारत के तहत भाषा संगम** सभी भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए शुरू इस कार्यक्रम में स्कूली बच्चे ऑडियो और वीडियो की सहायता से 22 अनुसूचित भाषाओं में रोजमर्रा के इस्तेमाल के 100 वाक्य सीखते हैं।
- समग्र शिक्षा योजना 2.0 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप रि-डिजाइन किया गया है जो 2025-26 तक चालू रहेगी।

404

पुस्तकों को शिक्षा मंत्रालय ने डिजिटल कर दिया है। इसमें मूलभूत चरण से शुरू होने वाली नई पाठ्य पुस्तकें शामिल हैं। पहली, दूसरी, तीसरी और छठी के सभी विषयों की पाठ्य पुस्तकों का 22 अनुसूचित भाषाओं में अनुवाद भी किया गया है।

स्कूलों में इंफ्रास्ट्रक्चर

एकीकृत जिला सूचना प्रणाली प्लस (यूडाईज+) के अनुसार देश भर के सरकारी स्कूलों में इंफ्रास्ट्रक्चर का स्तर तेजी से बढ़ा है। वित्त वर्ष 2023-24 की रिपोर्ट के अनुसार 97.1 प्रतिशत स्कूलों में बालिका शौचालय, 94.8 प्रतिशत में बालक शौचालय, 98.4 प्रतिशत में पेयजल, 92.4 प्रतिशत में बिजली कनेक्शन, 64.9 प्रतिशत में चारदीवारी और 46.2 प्रतिशत में इंटरनेट कनेक्शन हैं।

92.4%
में बिजली कनेक्शन हैं।

46.2%
में इंटरनेट कनेक्शन हैं।

इसके अलावा समग्र शिक्षा के अंतर्गत केंद्र सरकार ने

1,85,755

करोड़ रुपये की स्वीकृत लागत से 7,297 स्कूल भवनों के नवीनीकरण व सुधार को मंजूरी दी है।

अभियान को मिशन मोड पर चलाने का फैसला लिया। मिशन इंद्रधनुष के तहत देश के हर बच्चे तक पहुंचने का लक्ष्य तय किया। टीकाकरण अभियान को तेजी तो दी ही है, टीकों की संख्या में भी बढ़ोतरी की गई है। अब कुल मिलाकर 12 तरह की बीमारियों से बचाव के लिए टीके लगाए जाते हैं। यही कारण है कि भारत के प्रयासों और विशेष रूप से मिशन इंद्रधनुष को आज दुनिया भर में सराहा जा रहा है। एक मशहूर मेडिकल जर्नल ने इस कार्यक्रम को दुनिया की 12 बेस्ट प्रैक्टिस में चुना है। चाहे मिशन इंद्रधनुष हो या फिर प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान, गर्भ के दौरान पोषक आहार के लिए दी जा रही छह हजार

> “मोटापा हमारे देश के लिए एक बड़ी समस्या बनता जा रहा है। आने वाले सालों में हर तीसरा व्यक्ति इसका शिकार होगा। हमें खुद को मोटापे से बचाना होगा। इसलिए मैं आपको एक छोटा सा सुझाव देना चाहूंगा, खाना बनाते समय 10% कम तेल का इस्तेमाल करें।
>
> -नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

रुपये की मदद से न सिर्फ गर्भवती बल्कि गर्भ में पल रहे शिशु को भी पोषकता मिल रही है।

बच्चों के सुरक्षा कवच का एक महत्वपूर्ण पहलू है स्वच्छता- गंदगी विशेष तौर पर बच्चों के लिए घातक सिद्ध होती है क्योंकि उसको इस तरह के वातावरण में जीना पड़ता है। पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों के जीवन को डायरिया से सबसे अधिक खतरा होता है। स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से इस खतरे को दूर किया गया है। एक अंतरराष्ट्रीय रिपोर्ट में कहा गया है कि केवल स्वच्छ भारत मिशन से ही करीब 3 लाख लोगों का जीवन बच सकता है। यह ताकत है साफ-सफाई की, जो गरीब को बिना किसी खर्च के जीवनदान दे रहा है।

स्वस्थ बालक ही स्वस्थ राष्ट्र का निर्माता होता है। इसी विचार को मूर्त रूप देने के लिए केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय पोषण अभियान को मिशन मोड में चलाया है। इसके साथ ही आयुष्मान भारत योजना ने करोड़ों परिवारों को स्वास्थ्य सुरक्षा दी है। ग्रामीण क्षेत्रों में आंगनवाड़ी केंद्रों को सशक्त बनाकर बाल पोषण और प्रारंभिक शिक्षा दोनों को जोड़ा गया है। केंद्र सरकार की सोच स्पष्ट है कि जब बच्चे स्वस्थ रहेंगे, तभी वे सीखेंगे, सोचेंगे और आगे बढ़ेंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने यह भी सुनिश्चित किया है कि भारत का विकास केवल आधे समाज का नहीं, बल्कि पूरे समाज का हो। इसी उद्देश्य से बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान शुरू किया गया। इस योजना ने न केवल लिंगानुपात सुधारा बल्कि समाज की सोच में भी गहरा परिवर्तन आया है। आज देश की बेटियां विज्ञान, खेल, सेना और अंतरिक्ष तक हर क्षेत्र में परचम लहरा रही हैं।

डिजिटल भारत-भविष्य की तकनीक से जुड़ रहे बच्चे

21वीं सदी डिजिटल युग की सदी है और प्रधानमंत्री मोदी इस सच्चाई को भलीभांति समझते हैं। डिजिटल इंडिया अभियान ने भारत के बच्चों को तकनीकी रूप से सशक्त बनाने की दिशा में ऐतिहासिक कदम बढ़ाया है। अब गांवों तक इंटरनेट की पहुंच है, ऑनलाइन शिक्षा और स्मार्ट क्लासरूम सामान्य बात हो गई है। इस अभियान का परिणाम यह हुआ कि बच्चे न केवल तकनीक के उपयोगकर्ता हैं बल्कि इनोवेशन करने लगे

अटल इनोवेशन मिशन

स्कूल स्तर पर इनोवेशन को बढ़ावा

देश में नवाचार और उद्यमिता की संस्कृति को विकसित करने के उद्देश्य से अटल इनोवेशन मिशन की 2016 में शुरुआत की गई। तब से देशभर के स्कूलों में 10 हजार अटल टिंकरिंग लैब स्थापित की जा चुकी हैं। ताकि बच्चों में इनोवेशन को लेकर जिज्ञासा बढ़े और नए-नए इनोवेशन हों...

- 12 अगस्त, 2025 को, अटल इनोवेशन मिशन (नीति आयोग) ने एक 'मेगा टिंकरिंग डे' आयोजित किया था, जिसमें 9,467 अटल टिंकरिंग लैब से जुड़े 4,73,350 छात्रों ने भाग लिया। छात्रों ने स्वच्छ भारत अभियान के तहत **DIY** वैक्यूम क्लीनर का निर्माण किया, जिससे इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में एक नया रिकॉर्ड बना।

10,000

टिंकरिंग लैब से 1.10 करोड़ छात्र जुड़े हुए हैं।

50,000

अटल टिंकरिंग लैब अगले 5 वर्षों में सरकारी स्कूलों में और स्थापित करने की घोषणा वित्त वर्ष 2025-26 के बजट में की गई है।

हर कदम के लिए अलग पहल

विद्या प्रवेश
तीन महीने के प्ले आधारित स्कूल तैयारी के लिए मॉड्यूल। वार्षिक कैलेंडर में यह 12 सप्ताह का अनिवार्य हिस्सा है। शैक्षणिक सत्र 2024-25 में 8.94 लाख स्कूल के एक करोड़ छात्रों ने विद्या प्रवेश कार्यक्रम में भाग लिया।

बाल बाटिका
कक्षा-एक में प्रवेश करने वाले बच्चों के लिए प्रारंभिक कक्षा है। करीब 6 लाख स्कूलों में बाल बाटिका है।

निपुण भारत
5 जुलाई 2021 को समझ के साथ पठन और संख्या ज्ञान में दक्षता के लिए राष्ट्रीय पहल (निपुण भारत) की शुरुआत की गई ताकि कक्षा 2 के अंत तक आवश्यक रूप से बुनियादी साक्षरता व संख्या ज्ञान प्राप्त कर ले। इसमें 3 वर्ष की बाल वाटिका और कक्षा एक व दो शामिल है।

परख
समग्र विकास के लिए ज्ञान का प्रदर्शन मूल्यांकन, समीक्षा एवं विश्लेषण सर्वेक्षण की शुरुआत की गई। इसके तहत कक्षा 3, 6 और 9 में बुनियादी साक्षरता, बुनियादी संख्या ज्ञान, भाषा और गणित में क्षमता का मूल्यांकन करना है।

प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार
वर्ष 2018 में राष्ट्रीय बाल पुरस्कार को पुनर्गठित कर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार किया गया। 5 से 18 वर्ष के बच्चों को यह पुरस्कार दिया जाता है।

हैं। आज देश के छोटे शहरों और गांवों से भी ऐसे युवा उभर रहे हैं जो स्टार्टअप इंडिया और अटल इनोवेशन मिशन के माध्यम से विश्व स्तर पर पहचान बना रहे हैं।

पीएम केयर्स फॉर चिल्ड्रन: बड़ा सहारा

जीवन हमें कई बार अप्रत्याशित मोड़ पर लाकर खड़ा कर देता है। ऐसी स्थितियां जिनकी हमने कल्पना भी नहीं की होती हैं। हंसते-खेलते हुए अचानक अंधेरा छा जाता है, सब कुछ बदल जाता है। कोरोना ने अनेकों लोगों के जीवन में, अनेकों परिवारों में ऐसा ही कुछ किया। लेकिन उस आपदा में जिन बच्चों ने अपने माता-पिता को खो दिया, उसके लिए पीएम केयर्स फॉर चिल्ड्रन सहारा बनकर आया। यह कोरोना प्रभावित बच्चों की मुश्किलें कम करने का एक छोटा सा प्रयास, लेकिन बड़ा सहारा बना। पीएम केयर्स फॉर चिल्ड्रन इस बात का प्रतिबिंब है कि हर देशवासी पूरी संवेदनशीलता से बच्चों के साथ है। प्रभावित बच्चों का उनके घर के पास ही स्कूलों में दाखिला कराया गया। उनकी कॉपी-किताबें, यूनिफॉर्म का खर्च उठाने में पीएम केयर्स फॉर चिल्ड्रन मदद करता है। रोजमर्रा की दूसरी जरूरतों के लिए अन्य योजनाओं के माध्यम से उनके लिए 4 हजार रुपये हर महीने की व्यवस्था भी की गई है। ऐसे बच्चे जब अपनी स्कूल की पढ़ाई पूरी करेंगे, तो आगे भविष्य के सपनों के लिए और भी पैसों की जरूरत होगी। इसके लिए 18 से 23 साल तक के युवाओं को हर महीने भत्ता मिलेगा। उसके बाद जब वे 23 साल के होंगे, तब 10 लाख रुपये एक साथ मिलेंगे। इन बच्चों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के लिए आयुष्मान कार्ड से पांच लाख रुपये तक मुफ्त इलाज की भी सुविधा मिल रही है। इन बच्चों को बड़े-बुजुर्गों के अलावा भावनात्मक सहयोग और उचित मानसिक मार्गदर्शन मिले इसके लिए विशेष 'संवाद हेल्पलाइन' भी बनाई गई है, जिस पर वह मनोवैज्ञानिक विषयों पर सलाह ले सकते हैं।

> “अगर जीवन में चुनौती और स्पर्धा न हो, तो जीवन प्रेरणाहीन और चेतनाहीन बन जाएगा। इसलिए कंपटीशन तो होना ही चाहिए लेकिन हेल्दी कंपटीशन होना चाहिए।
>
> -नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

नई पहलें

परीक्षा पे चर्चा (पीपीसी)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का छात्र, शिक्षक और अभिभावकों के साथ संवाद कार्यक्रम है जिसकी शुरुआत 16 फरवरी 2018 को हुई। पहले कार्यक्रम में जहां 22 हजार प्रतिभागी थे, वहीं 10 फरवरी 2025 को हुए 8वें आयोजन में प्रतिभागियों की संख्या 5.11 करोड़ पहुंच गई।

10% तेल कम करना

पीएम नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' के 119 एपिसोड में बच्चों में 4 गुना मोटापा बढ़ने की रिपोर्ट का हवाला देकर चिंता जाहिर की और इससे निपटने के तरीके सुझाए। वर्कआउट और खाने में 10% तेल कम करने की अपील भी की।

स्वदेशी अपनाने की अपील

स्वदेशी आंदोलन कोई सदियों पुराना अवशेष नहीं है, बल्कि भविष्य को मजबूत करने वाला एक अभियान है और इसका नेतृत्व समाज, विशेषकर युवाओं को करना चाहिए। ऐसे ही आह्वान बच्चों और युवाओं से कई बार करके उनमें स्वदेशी अपनाने की नींव पीएम मोदी डाल रहे हैं।

वीर बालकों से बातचीत

पीएम मोदी ने 2024 में वीर बालक दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार विजेताओं से संवाद किया। इस दौरान वीरता, नवाचार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, खेल और कला के क्षेत्र में विजयी बच्चे कार्यक्रम में शामिल हुए। संवाद के दौरान पीएम मोदी ने कहा कि वीर बालक दिवस का यह दिन हमें सिखाता है कि चाहे कितनी भी विकट स्थितियां आएं... कितना भी विपरीत समय क्यों न हो, देश और देशहित से बड़ा कुछ नहीं होता।

बचपन सुरक्षित भारत सशक्त

बच्चों की मुस्कान में छुपा है देश का भविष्य। इसी भविष्य को सुरक्षित रखने की दिशा में केंद्र सरकार ने 2014 से अब तक कई कानूनी कदम उठाए हैं, ताकि हिंसा, शोषण, बाल श्रम और लैंगिक भेदभाव जैसे अपराधों पर अंकुश के साथ खिलखिलाता रहे बचपन...

बाल श्रम

- भारत में बाल श्रम एक पुरानी समस्या रही है। 2016 में पारित बाल श्रम (प्रतिबंध और नियमन) संशोधन अधिनियम ने इस दिशा में ऐतिहासिक बदलाव किया।
- इस संशोधन ने 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए हर तरह के रोजगार करने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया।
- 14 से 18 वर्ष के किशोरों के लिए खतरनाक उद्योगों में कार्य करने पर रोक लगाई गई।

- बाल श्रम कराने वालों के लिए कठोर दंड के प्रावधान किए गए। पहली बार जेल और भारी जुर्माने दोनों का प्रावधान।
- यह कदम न केवल अंतरराष्ट्रीय श्रम मानकों के अनुरूप था, बल्कि "काम के बजाय शिक्षा" की दिशा में सामाजिक चेतना जगाने वाला भी साबित हुआ।

संस्कार और राष्ट्रप्रेम- विकसित भारत की आत्मा

केंद्र सरकार का यह भी मानना है कि विकसित भारत केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं, बल्कि संस्कारों और मूल्यों के स्तर पर भी मजबूत होना चाहिए। सरकार की सोच बच्चों को न केवल आधुनिक शिक्षा देना है, बल्कि भारतीय संस्कृति, योग, पर्यावरण-संरक्षण और आध्यात्मिकता से जोड़ना

जुबेनाइल जस्टिस एक्ट 2015

- बच्चों के अधिकारों की रक्षा करने, उन्हें कानूनी सहायता प्रदान करने और अपराध में शामिल या पीड़ित बच्चों के पुनर्वास के प्रावधानों के साथ केंद्र सरकार ने 2015 बाल न्याय (देखभाल और संरक्षण) अधिनियम लागू किया।
- इसका उद्देश्य बाल न्याय प्रणाली को अधिक जवाबदेह, संवेदनशील और व्यवहारिक बनाना था। इसमें किशोर न्याय बोर्ड और बाल कल्याण समितियों की स्थापना जैसे प्रावधान शामिल।

आसान हुआ भारत में गोद लेने का इकोसिस्टम

केंद्रीय दत्तक ग्रहण संसाधन प्राधिकरण (कारा) ने देश में बच्चों को गोद लेने की प्रक्रिया को सुलभ बनाया है। मासूम बच्चों की सुरक्षा के लिए गोद लेने की प्रक्रिया कानूनी और नैतिक हो यह सुनिश्चित किया गया है।

8,598 बच्चों को कारा ने एक पहचान अभियान के तहत गोद लेने से संबंधित पूल में शामिल किया।

4,515 बच्चे वित्त वर्ष 2024-25 में गोद लिए गए जो बीते एक दशक यानी 2014-15 के बाद से रिकॉर्ड है।

खेल-खेल में भविष्य की तैयारी

भारत के इतिहास में पहली बार 3-8 वर्ष के बच्चों की शिक्षा के शुरुआती चरण के लिए नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क 2022 की रूपरेखा विकसित की गई है। यह अपनी मातृ भाषा में खेल और कहानी आधारित शिक्षा पर जोर देता है। यही वजह है कि जादुई पिटारा उनकी समझ के लिए विकसित किया गया है। खिलौने, कठपुतलियां, दिलचस्प कहानियां, पहेलियां, पोस्टर और खेल भी इस जादुई पिटारे में शामिल हैं।

खो जाने वाले बच्चों को तलाशने और घर वापसी के लिए पोर्टल

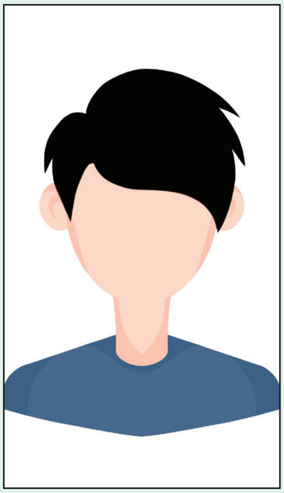

- महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने 'ट्रैक चाइल्ड पोर्टल' विकसित किया है, जो देश भर से लापता और पाए गए बच्चों का पता लगाने में सक्षम है।
- ट्रैक चाइल्ड पोर्टल गृह मंत्रालय के सीसीटीएनएस या अपराध और आपराधिक ट्रैकिंग व नेटवर्क सिस्टम से भी जुड़ा हुआ है।
- बच्चों का पता लगाने और उनका मिलान करने के लिए ट्रैक चाइल्ड के डेटाबेस के साथ लापता बच्चों की प्राथमिकी (एफआईआर) का मिलान करने के लिए सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाता है।

यहां 'खोया-पाया' सेक्शन में कोई भी नागरिक किसी भी लापता या देखे गए बच्चे की रिपोर्ट कर सकता है। वहीं एनसीपीसीआर ने घर-गो होम एंड री-यूनाइट (बच्चे का उद्धार और घर वापसी के लिए) पोर्टल शुरू किया है।

भी है। स्वदेशी की बात हो या फिर स्वाधीनता संग्राम के सेनानियों से प्रेरणा लेना, भारत की विरासत को समझना हो या फिर संविधान के मूल्यों को जानना, केंद्र सरकार सभी स्तर पर ऐसी गतिविधियां-पहल और अभियान का आयोजन करती है, जिससे बच्चों को जोड़ा जा सके।

निश्चित रूप से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का वर्तमान और भावी पीढ़ी पर विश्वास ही आज की भारत यात्रा का सबसे बड़ा बल है। वे जड़ों को सींच रहे हैं ताकि आने वाली पीढ़ियां फलों से लदे वृक्ष की तरह भारत को गौरवान्वित करे क्योंकि यही बच्चे भारतीय विरासत के कर्णधार बनेगें। आज के बच्चे केवल भविष्य के नहीं, बल्कि आज के भारत की आशा, प्रेरणा और शक्ति भी हैं। बीते 11 वर्षों में केंद्र सरकार की नीति और दृष्टिकोण बताता है कि एक मां की तरह अपने बच्चों को पोषित करने की सोच जब संवेदनशील राष्ट्र की नीति बन जाती है तो आने वाली पीढ़ी सही अर्थों में वर्तमान के साथ-साथ विकसित भारत के भी सारथी बन जाते हैं।■

सुरक्षा, संकल्प और दीपावली

समुद्र के प्रहरियों के साथ प्रधानमंत्री की दीपावली

दीपावली का त्योहार आमतौर पर लोग अपने परिवार के साथ मनाते हैं और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी यही करते हैं। यही वजह है कि गुजरात के मुख्यमंत्री से लेकर बतौर प्रधानमंत्री भी अपना हर दीपोत्सव देश की सुरक्षा के लिए तैनात सेना के जवानों और सुरक्षाकर्मियों के साथ मनाते हैं क्योंकि वह उन्हें अपना परिवार मानते हैं। इस साल भी उन्होंने यही किया...गोवा और कारवार के पश्चिमी तट पर देश के बहादुर नौसैनिकों के साथ आईएनएस विक्रांत पर मनाई दिवाली...

राष्ट्र के सैन्य बलों ने जल-थल-नभ, हर मोर्चे पर और हर परिस्थिति में देश की सेवा समर्पण और पूरी संवेदनशीलता के साथ की है। नौसेना, देश की समुद्री सीमाओं और व्यापारिक हितों की सुरक्षा के लिए तैनात रहती है वहीं एयरफोर्स, आकाश में भारत की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध रहती है। जमीन पर, तपते रेगिस्तान से लेकर ग्लेशियर तक थल सेना, बीएसएफ और आईटीबीपी के जवान चट्टान की तरह खड़े रहते हैं। इसी तरह, अलग-अलग मोर्चों पर एसएसबी, असम राइफल्स, सीआरपीएफ, सीआईएसएफ और इंटेलिजेंस एजेंसी के जवान भी निरंतर एक यूनिट के रूप में मां भारती की सेवा में डटे रहते हैं। इतना ही नहीं, भारतीय तटरक्षक बल भी नेवी के साथ समन्वय बनाकर कोस्टलाइन सिक्योरिटी में दिन-रात तैनात रहते हैं।

राष्ट्र रक्षा के इस महायज्ञ में सदैव योगदान देने वाले ऐसे ही सैन्य बलों के साथ प्रधानमंत्री मोदी अपनी हर दीपावली मनाते आ रहे हैं। इस साल उन्होंने आईएनएस विक्रांत पर सशस्त्र बलों के साथ दिवाली मनाई। 20 अक्टूबर को आईएनएस विक्रांत पर दिवाली समारोह के दौरान जवानों को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि दीपावली का पर्व हर किसी को अपने परिवार के बीच मनाने का मन करता है। मुझे भी मेरे परिवारजनों के बीच दीपावली मनाने की आदत हो गई है। आप जो मेरे परिवारजन हैं, उनके बीच मैं दीपावली मनाने चला आता हूं। उन्होंने कहा कि मैं भी यह दीपावली मेरे परिवारजनों के साथ मना रहा हूं और इसलिए

वैश्विक स्थिरता में अहम भूमिका निभा रही भारतीय नौसेना

- आज जब दुनिया में देशों की अर्थव्यवस्था और प्रगति समुद्री रास्तों पर निर्भर है, तब भारत की नेवी वैश्विक स्थिरता में अहम भूमिका निभा रही है।
- दुनिया की 66% तेल सप्लाई, दुनिया के 50% कंटेनर शिपमेंट, हिंद महासागर से होकर गुजरते हैं। इन मार्गों की सुरक्षा में इंडियन नेवी भारतीय महासागर की अभिभावक की तरह तैनात है।
- मिशन-आधारित तैनाती, समुद्री डकैती विरोधी गश्त और मानवीय मदद वाले अभियानों के जरिए भारतीय नौसेना इस पूरे क्षेत्र में वैश्विक सुरक्षा की साझेदारी में मुख्य भूमिका निभाती है।
- द्वीपों की सुरक्षा और अखंडता में नेवी की बड़ी भूमिका है। 26 जनवरी को देश के हर द्वीप पर तिरंगा फहराया जाने का संकल्प लिया गया था जिसे नेवी आन-बान-शान के साथ पूरा करती है। 2014 में मालदीव में पानी का संकट आने पर ऑपरेशन नीर चलाया गया था तब नेवी स्वच्छ पानी लेकर वहां पहुंची।

आत्मनिर्भरता की ओर तेजी से कदम बढ़ा रहा रक्षा क्षेत्र

- 11 वर्षों में भारत का रक्षा उत्पादन तीन गुना से भी ज्यादा बढ़कर पिछले साल 1.5 लाख करोड़ रुपये को पार कर गया है।
- 2014 से अब तक भारतीय शिपयार्ड ने नौसेना को 40 से ज्यादा स्वदेशी युद्धपोत और पनडुब्बियां प्रदान की हैं।
- पिछले एक दशक में देश का रक्षा निर्यात 30 गुना से अधिक बढ़ गया है। इस सफलता के पीछे बड़ी भूमिका डिफेंस स्टार्टअप और स्वदेशी डिफेंस इकाइयों की है।

वर्तमान में औसतन हर **40** दिन में एक नया स्वदेशी युद्धपोत या पनडुब्बी नौसेना में शामिल हो रही है।

"

आईएनएस विक्रांत आज आत्मनिर्भर भारत और मेड इन इंडिया का बहुत बड़ा प्रतीक है। महासागर को चीरता हुआ, स्वदेशी आईएनएस विक्रांत भारत की सैन्य क्षमता का प्रतिबिंब है।

\- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

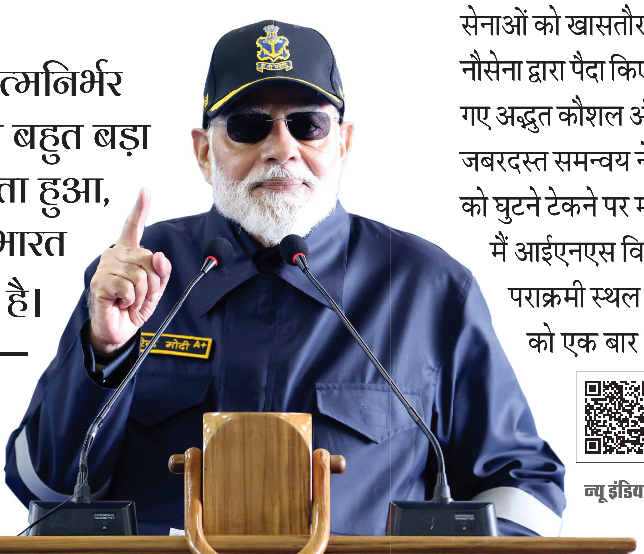

आईएनएस विक्रांत पर हुए आयोजन

- आईएनएस विक्रांत के उड़ान डेक पर मिग-29 लड़ाकू विमानों के साथ नजर आए पीएम मोदी।
- पीएम मोदी ने आश्चर्यजनक और प्रेरणादायक वायु शक्ति प्रदर्शन देखा जिसमें सटीकता और पराक्रम की झलक नजर आई।
- नौसेना कर्मियों के साथ पीएम मोदी ने खाना खाया और सांस्कृतिक कार्यक्रम में शामिल हुए जहां जवानों ने 'कसम सिंदूर की' गीत गया।
- आईएनएस विक्रांत पर योग सत्र का आयोजन हुआ जिसमें नौसैनिकों ने भाग लिया।

यह मेरे लिए खास है।

पीएम मोदी की यह दीपावली कई मायनों में खास थी क्योंकि उन्होंने आईएनएस विक्रांत पर ही रात बिताई और यहीं से सुबह का सूर्योदय भी देखा। उनके एक ओर समुद्र का विहंगम दृश्य था तो दूसरी ओर मां भारती के वीर जवानों का अथाह सामर्थ्य। एक ओर अनंत क्षितिज था तो दूसरी ओर असीम शक्तियों को समेटे विशाल, विराट आईएनएस विक्रांत। कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि समुद्र के पानी पर सूर्य की किरणों की चमक एक तरह से वीर जवानों द्वारा जलाए दीपावली के दीये हैं। मेरा सौभाग्य है कि इस बार मैं नौसेना के वीर जवानों के बीच यह दिवाली का पावन पर्व मना रहा हूं। इस अवसर पर उन्होंने सेनाओं को खासतौर पर सैल्यूट किया और कहा कि नौसेना द्वारा पैदा किए गए भय, वायुसेना द्वारा दिखाए गए अद्भुत कौशल और भारतीय सेना की जांबाजी के जबरदस्त समन्वय ने ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। इसलिए आज मैं आईएनएस विक्रांत की इस पवित्र साधना एवं पराक्रमी स्थल से तीनों सेना के जांबाज जवानों को एक बार फिर से सैल्यूट करता हूं।■

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

समुद्र से समृद्धि का रास्ता

मैरीटाइम इंडिया विजन 2030 और समुद्री अमृतकाल विजन 2047 के साथ भारत ने समृद्धि की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। इंडिया मैरीटाइम वीक 2025 के दौरान 29 अक्टूबर को लीडर्स कॉन्क्लेव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समुद्री क्षमताओं में विस्तार के इसी विजन को किया साझा...

भारत की विशाल तटरेखा केवल प्राकृतिक संपदा ही नहीं, बल्कि अनंत संभावनाओं का वह सजीव कैनवास भी है, जो वैश्विक समुद्री परिदृश्य में देश की समृद्धि और नेतृत्व का नया द्वार खोल रही है। दरअसल, भारत के कुल व्यापार का 95 फीसदी और मूल्य के लिहाज से करीब 70% हिस्सा समुद्री मार्गों के जरिए ही गुजरता है। यह बंदरगाह भारत को विश्व भर के बाजारों से जोड़ते हैं। इसीलिए कहा जाता है कि भारत की आर्थिक शक्ति का प्रवाह समंदरों से होता है। भारत अब वैश्विक समुद्री परिदृश्य में खुद को मजबूत शक्ति के रूप में स्थापित करना चाहता है। यही वजह है कि वर्ष 2014 के बाद भारत ने अपनी समुद्री क्षमताओं के भरपूर उपयोग की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास शुरू किए। वर्ष 2021 में इंडिया मैरीटाइम विजन 2030 की शुरुआत भी इसी रणनीति के तहत की गई। समृद्धि की संभावनाओं से भरे इसी विजन का जिक्र पीएम मोदी ने इंडिया मैरीटाइम वीक 2025 में भी किया। मुंबई में 27 से 31 अक्टूबर तक आयोजित इस कार्यक्रम में 85 देशों के 10 हजार से अधिक प्रतिनिधियों ने भागीदारी की।

मैरीटाइम लीडर्स कॉन्क्लेव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने समुद्री क्षमता में विस्तार के लिए भारत की ओर से उठाए गए कदमों के साथ-साथ भविष्य की रणनीति पर भी बात की। बीते 11 वर्षों में भारत के मैरीटाइम सेक्टर में ऐतिहासिक परिवर्तन हुए हैं जिसके लिए 150 से अधिक नई पहल शुरू की गई हैं। बड़े बंदरगाहों की क्षमता लगभग दोगुनी हुई है। टर्न अराउंड टाइम यानी बंदरगाह पर माल उतारने या चढ़ाने वाले समय में कमी आई है। क्रूज पर्यटन को नई गति मिली है। जलमार्गों पर कार्गो परिवहन में 700 फीसदी से ज्यादा बढ़ोतरी हुई है। पीएम मोदी कहते हैं कि आज भारत के बंदरगाह विकासशील देशों में सबसे अधिक कुशल बंदरगाह के रूप में गिने जाते हैं। कई मामलों में यह विकसित देशों के मुकाबले भी बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। भारत के बंदरगाहों पर आज कंटेनर के ठहराव का औसत समय 3 दिन से कम रह गया है जो कई विकसित देशों से बेहतर है। जहाजों के ठहराव की औसत अवधि 96 घंटे से घटकर सिर्फ 48 घंटे रह गई है। इसके साथ ही विश्व बैंक के लॉजिस्टिक परफॉर्मेंस इंडेक्स में भी प्रदर्शन सुधरा है।

समुद्री क्षेत्र में भारत के वैभवशाली इतिहास और भविष्य से जुड़े विजन की जानकारी देते हुए पीएम मोदी ने अजंता की गुफाओं के उस चित्र का जिक्र किया जिसमें तीन स्तंभों वाला एक जहाज

लक्ष्य... मैरीटाइम इंडिया विजन के तहत वर्ष 2030 तक शिपिंग और शिप बिल्डिंग में टॉप 10 और वर्ष 2047 तक समुद्री अमृतकाल विजन के तहत टॉप 5 देशों में शामिल होना है।

प्रयास...

3.5 लाख करोड़ रुपये के अनुमानित निवेश से मैरीटाइम इंडिया विजन 2030 के तहत 150 से अधिक नए इनीशिएटिव शुरू किए गए।

- अब पोर्ट्स-शिपिंग में 100 प्रतिशत विदेशी निवेश की अनुमति है।
- 100 साल से अधिक पुराने शिपिंग कानूनों को हटाकर मर्चेंट शिपिंग एक्ट और कोस्टल शिपिंग एक्ट लागू किया गया।
- सितंबर 2025 में 69,725 करोड़ रुपये की जहाज निर्माण और समुद्री सुधार योजनाओं की शुरुआत की गई।
- पूर्वोत्तर भारत में अंतर्देशीय जलमार्ग इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास में 1,000 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश किया गया।

5.8 लाख करोड़ रुपये

सागरमाला कार्यक्रम के तहत 2035 तक 840 परियोजनाओं पर खर्च किए जाने हैं।

परिणाम...

- भारत प्रशिक्षित नाविकों के मामले में दुनिया के शीर्ष तीन आपूर्तिकर्ताओं में से एक बना। समुद्री कामगारों की संख्या 1.25 लाख से बढ़कर 3 लाख से अधिक हो गई है। यह वैश्विक समुद्री कामगारों का 12% है।
- ऑपरेशनल जलमार्गों की संख्या जो पहले 3 थी अब वह 32 हो गई है। हमारे बंदरगाहों का शुद्ध वार्षिक लाभ 9 गुना बढ़ा है।
- विझिंजम पोर्ट के रूप में भारत का पहला डीप वाटर इंटरनेशनल ट्रांसशिपमेंट हब ऑपरेशनल हो चुका है। कुछ समय पहले ही दुनिया का सबसे बड़ा कंटेनर वेसल वहां पहुंचा है।
- वित्त वर्ष 2024-25 में प्रमुख बंदरगाहों के जरिए 85.5 करोड़ टन माल की दुलाई हुई जिससे समुद्री व्यापार और बंदरगाह कार्यकुशलता में ठोस वृद्धि का संकेत मिलता है।
- कांडला पोर्ट ग्रीन हाइड्रोजन संयत्र की सुविधा वाला भारत का पहला बंदरगाह बना है। टर्मिनल फेज 2 की शुरुआत के साथ मुंबई सबसे बड़ा कंटेनर पोर्ट बन गया है।

2047 तक समुद्री क्षेत्र में लगभग 8 ट्रिलियन रुपये का निवेश आने और लगभग 1.5 करोड़ रोजगार सृजित होने की उम्मीद है।

दिखाई देता है। यह चित्र छठवीं शताब्दी में बनाया गया था जबकि दुनिया ने इसके सदियों बाद तीन स्तंभों वाले जहाजों का इस्तेमाल शुरू किया। भारत में बने शिप ग्लोबल ट्रेड का अहम हिस्सा हुआ करते थे। अब भारत फिर से शिप मेकिंग के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां छूने के लिए अपने प्रयास तेज कर रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि छत्रपति शिवाजी महाराज ने हमें दिखाया है कि समुद्र केवल सीमाएं नहीं, बल्कि अवसरों के द्वार होते हैं। आज भारत उसी सोच के साथ आगे बढ़ रहा है।■

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

हर जरूरतमंद को घर... आवास भी, रोजगार भी

घर, जहां सपने आकार लेते हैं। ऐसे ही गुणवत्तापूर्ण आवास उपलब्ध कराने के लिए 2016 को शुरू प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण की 20 नवंबर को है 9वीं वर्षगांठ। अब योजना के विस्तार से हर पात्र परिवार को मिलेगा आवास और बढ़ेंगे रोजगार के अवसर...

घर केवल सिर ढकने की छत नहीं बल्कि सामाजिक, आर्थिक और भविष्य को मजबूती देने का आश्रय भी होता है। घर में एक परिवार का वर्तमान और भविष्य तय होता है। यही वजह है कि 2014 में जब केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार गठित हुई तो 2015 में प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी और 2016 में प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण की शुरुआत की गई। फिर घर को गरीबी से लड़ाई का एक ठोस आधार और मूलभूत जरूरतों को पूरा करने का माध्यम बनाया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं, "प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत बन रहे घर आज सिर्फ एक योजना तक सीमित नहीं है। ये कई योजनाओं का एक पैकेज है। इसमें स्वच्छ भारत अभियान के तहत बना शौचालय है, सौभाग्य योजना में बिजली कनेक्शन, उज्ज्वला योजना के तहत मुफ्त एलपीजी कनेक्शन, तो जल जीवन मिशन के तहत नल से जल मिलता है। पहले ये सारी सुविधाएं पाने के लिए गरीब को सालों-साल सरकारी दफ्तरों के चक्कर लगाने पड़ते थे।"

प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण में शुरुआती 2.95 करोड़ और 2 करोड़ अतिरिक्त नए आवास को मंजूरी के साथ कुल 4.95 करोड़ घर बनाने का लक्ष्य रखा गया है। अगस्त

टेक्नोलॉजी से बढ़ी पारदर्शिता

आवास+ 2024 एप का उपयोग, एआई/एमएल धोखाधड़ी का पता लगाना, ई-केवाईसी, आधार-आधारित डीबीटी, जियो-टैग्ड फोटो और निगरानी के लिए वास्तविक समय डैशबोर्ड के इस्तेमाल से ग्रामीण और पिछड़ी आबादी को मदद मिलने में आसानी हुई एवं पारदर्शिता बढ़ी है। प्रस्तावित स्थल से लेकर निर्माण पूरा होने तक प्रत्येक चरण में जियो टैग्ड और टाइम स्टाम्प के साथ फोटो अपलोड करना अनिवार्य है।

रोजगार सृजन का माध्यम बनी योजना

पीएम आवास योजना(ग्रामीण) में प्रत्येक लाभार्थी को मनरेगा के साथ तालमेल बिठाकर, घर के निर्माण के लिए वर्तमान दरों पर 90/95 व्यक्ति-दिवस अकुशल मजदूरी रोजगार प्रदान करना अनिवार्य है।

201 व्यक्ति-दिवस रोजगार

(56 कुशल, 34 अर्ध-कुशल और 111 अकुशल) एक घर के निर्माण से उत्पन्न होता है।

568 करोड़ व्यक्ति-दिवस

से अधिक रोजगार उत्पन्न हुए हैं पिछले नौ वर्षों के दौरान, पीएम आवास योजना (ग्रामीण) के तहत 2.83 करोड़ घरों के निर्माण से।

- इसके अंतर्गत ग्रामीण राजमिस्त्री प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत, अगस्त 2025 तक 2.97 लाख उम्मीदवार प्रशिक्षित हुए। कुछ प्रमाणित राजमिस्त्रियों को विदेशों में काम करने के अवसर भी मिले।
- योजना से घर निर्माण के लिए निर्माण सामग्री के उत्पादन और उनके परिवहन के माध्यम से महत्वपूर्ण अप्रत्यक्ष रोजगार सृजन।

किराए के मकान

- शहरी कामगारों के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी में किफायती किराया आवास परिसर योजना शुरू।

41,000

से अधिक आवास पूरे। योजना में कुल 82,273 नई इकाइयों के प्रस्तावों को मंजूरी।

ग्रामीण भारत में पक्के घर... आकार ले रहा है सपना

प्रधानमंत्री आवास योजना - ग्रामीण की शुरुआत 20 नवंबर, 2016 को की गई और प्रभावी 1 अप्रैल, 2016 से हुई। लाभार्थियों का चयन सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना 2011, ग्राम सभा की मंजूरी और जियो-टैगिंग के तीन चरण से किया जाता है।

4.95 करोड़ मकानों का कुल लक्ष्य।

4.12 करोड़ मकान राज्य व केंद्र शासित प्रदेशों को आवंटित।

3.85 करोड़ मकान स्वीकृत, 2.83 करोड़ मकानों का निर्माण पूरा।

- 2,61,432 करोड़ रु. अगस्त, 2025 तक केंद्र ने जारी किए।
- 3.06 लाख करोड़ रु. होंगे 2 करोड़ अतिरिक्त आवास पर खर्च।

पीएमएवाई-शहरी 2.0 में 10 लाख करोड़ रु. का निवेश

पीएम आवास योजना (शहरी) 2.0 का लक्ष्य 2.20 लाख करोड़ रुपये की केंद्रीय सहायता के साथ एक करोड़ शहरी जरूरतमंद परिवारों के घर की जरूरतों को पूरा करना है। 15 जून, 2015 को योजना की शुरुआत हुई।

95.51 लाख घर तैयार।

1.21 करोड़ आवास 22 अक्टूबर, 2025 तक स्वीकृत।

16 लाख से अधिक आधुनिक तकनीक वाले लाइट हाउस बने।

22x हुआ कुल निवेश

2014	**0.38** लाख करोड़ रुपये
2025	**8.29** लाख करोड़ रुपये

2025 तक राज्य व केंद्र शासित प्रदेशों को 4.12 करोड़ घर आवंटित किए गए जिसमें 3.85 करोड़ स्वीकृत। इनमें से 2.83 करोड़ घर पूरे हो चुके हैं। पीएम आवास योजना-ग्रामीण में वंचितों को प्राथमिकता की कड़ी में अगस्त, 2025 तक 2,68,480 भूमिहीन लाभार्थियों को आवास स्वीकृत किए गए हैं। इस योजना से बीते नौ वर्षों में 568 करोड़ व्यक्ति-दिवस रोजगार सृजित हुए हैं वहीं, 2028-29 तक 2 करोड़ अतिरिक्त घरों के निर्माण से लगभग 10 करोड़ लोगों को लाभ मिलने की उम्मीद है। तेज गति से मकानों का निर्माण हो इसके लिए आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल किया जा रहा है। घर निर्माण की नई प्रौद्योगिकियां सभी के लिए किफायती, टिकाऊ और नए घर के सपने को साकार कर रही हैं। पीएम आवास योजना में 70% घर महिला लाभार्थियों के नाम पर हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण योजना में 60% अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति और 15% अल्पसंख्यकों को मकान दिए जाने का लक्ष्य रखा गया है।■

51 हजार से अधिक नियुक्ति पत्रों का वितरण

युवा सामर्थ्य ही सबसे बड़ी ताकत

भारत की युवा शक्ति देश की ऊर्जा और सामर्थ्य का प्रतीक है। यही वजह है कि केंद्र सरकार ने मुद्रा योजना, स्किल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसे ठोस कदम उठाए हैं। वहीं दूसरी ओर रोजगार मेलों के माध्यम से अब तक लगभग 11 लाख नियुक्तियां दी जा चुकी हैं। इसी कड़ी में 24 अक्टूबर को सौंपे गए 51 हजार से अधिक नियुक्ति पत्र...

भारत की सबसे बड़ी पूंजी उसका युवा मानव संसाधन है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यही सोच केंद्र सरकार की नीतियों में स्पष्ट झलकती है, जहां शिक्षा, कौशल, रोजगार और आत्मनिर्भरता की दिशा में हर पहल का केंद्र बिंदु देश का युवा है। एक ओर स्किल इंडिया मिशन जैसे अभियानों के जरिए युवाओं को कौशल विकास की ट्रेनिंग दी जा रही है, वहीं रोजगार मेला और नेशनल करियर सर्विस प्लेटफॉर्म जैसी पहल उन्हें नए अवसरों से भी जोड़ रही हैं। केंद्र सरकार के यह प्रयास केवल सरकारी नौकरियों तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि देश में 'पीएम विकसित भारत रोजगार योजना' भी शुरू की गई है। इस योजना के तहत साढ़े 3 करोड़ युवाओं को नौकरी देने का लक्ष्य रखा गया है। भारत की युवा आकांक्षाओं को पूरा करने की दिशा में केंद्र सरकार की इसी प्रतिबद्धता का जिक्र प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रोजगार मेले में युवाओं को संबोधित करते हुए किया। उन्होंने कहा कि भारत आज हर क्षेत्र में अपने युवाओं के सामर्थ्य को बड़ी ताकत मानकर आगे बढ़ रहा है। यहां तक कि हमारी विदेश नीति भी भारत के युवाओं के हितों को ध्यान में रखकर बनाई जा रही है। राजनयिक वार्ताओं

युवाओं के लिए बड़ा कदम- 'प्रतिभा सेतु पोर्टल'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रोजगार, कौशल और उद्योग को एक सूत्र में जोड़ने वाली केंद्र सरकार की बड़ी पहल 'प्रतिभा सेतु पोर्टल' का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि जो अभ्यर्थी यूपीएससी की अंतिम सूची तक पहुंचे लेकिन चयनित नहीं हुए, उनकी मेहनत अब व्यर्थ नहीं जाएगी। निजी और सार्वजनिक दोनों संस्थान अब इस पोर्टल के माध्यम से इन प्रतिभाशाली व्यक्तियों से जुड़ रहे हैं। इस पोर्टल से उन युवाओं को बुला कर इंटरव्यू कर उन्हें अवसर भी दे रहे हैं।

युवाओं को सरकारी नौकरी देने के लिए रोजगार मेला

कब हुआ	नियुक्ति पत्र दिए
22 अक्टूबर 2022	75 हजार +
22 नवंबर 2022	71 हजार +
20 जनवरी 2023	71 हजार +
13 अप्रैल 2023	71 हजार +
16 मई 2023	70 हजार +
13 जून 2023	70 हजार +
22 जुलाई 2023	70 हजार +
28 अगस्त 2023	51 हजार +
26 सितंबर 2023	51 हजार +
28 अक्टूबर 2023	51 हजार +
30 नवंबर 2023	51 हजार +
12 फरवरी 2024	1 लाख +
29 अक्टूबर 2024	51 हजार +
23 दिसंबर 2024	71 हजार +
26 अप्रैल 2025	51 हजार +
12 जुलाई 2025	51 हजार +
24 अक्टूबर 2025	51 हजार +

राष्ट्र निर्माण में योगदान का अवसर

आई गॉट कर्मयोगी भारत प्लेटफॉर्म से जुड़कर लगभग डेढ़ करोड़ कर्मचारी स्किल अपग्रेड कर रहे हैं।

3,600 से अधिक उच्च गुणवत्तापूर्ण पाठ्यक्रम उपलब्ध।

- भारत सरकार और राज्य सरकार मिलकर रोजगार के लाखों नए अवसरों का सृजन कर रही हैं।
- **13** क्षेत्रीय भाषाओं में समान अवसरों के लिए भर्ती परीक्षाओं का आयोजन।
- यूपीएससी, एसएससी, रेलवे भर्ती बोर्ड और आईबीपीएस जैसी प्रतिष्ठित एजेंसियों के माध्यम से नियुक्तियां की जा रही हैं।
- पारदर्शी एवं समयबद्ध नियुक्ति प्रक्रिया सुनिश्चित एवं पेपर लीक के खिलाफ कड़ा कानून लागू।
- राष्ट्र-निर्माण में युवाओं की बढ़ती सहभागिता से 'नागरिक प्रथम' के संकल्प की सिद्धि।
- महिलाओं, दिव्यांगजनों और आकांक्षी जिलों के अभ्यर्थियों को विशेष लाभ।

और ग्लोबल एमओयू में युवाओं की ट्रेनिंग, अप-स्किलिंग और रोजगार सृजन को भी शामिल किया जा रहा है।

अपने संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि आज जब देश की सफलताओं और विजन की बात होती है तो आने वाले समय में उसमें युवाओं की भी एक बड़ी भूमिका होगी। राष्ट्र निरंतर 'विकसित भारत' के लक्ष्य के लिए काम कर रहा है और युवा कर्मयोगी ही इस संकल्प को सिद्धि तक लेकर जाएंगे। पीएम मोदी ने कहा कि आज आपको केवल सरकारी नियुक्ति नहीं मिली है, आपको राष्ट्र सेवा में सक्रिय योगदान देने का अवसर मिला है। मुझे यह विश्वास है, आप इसी भावना से काम करेंगे। ईमानदारी और शुचिता के साथ आप भविष्य के भारत के लिए बेहतर व्यवस्था बनाने में अपनी भूमिका निभाएंगे। युवाओं को सीख देते हुए उन्होंने कहा कि आप जानते हैं कि हमारे लिए 'नागरिक देवो भवः' मंत्र है। इसलिए सेवा और समर्पण भाव से, हर नागरिक के जीवन में हम उपयोगी कैसे हों, आपको यह कभी नहीं भूलना है।■

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

राष्ट्र एक संकल्प अटूट

आजादी के बाद देश के गृह मंत्री के रूप में सरदार वल्लभभाई पटेल ने 550 से ज्यादा रियासतों को जोड़कर राष्ट्रीय एकता और सशक्तीकरण की जो नींव रखी, उसकी मिसाल आज भी दी जाती है। राष्ट्रीय एकता दिवस व उनकी 150वीं जयंती के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का विचार उनके लिए था सर्वोपरि...

सरदार वल्लभभाई पटेल का मानना था कि इतिहास लिखने में समय बर्बाद नहीं करना चाहिए बल्कि इतिहास रचने के प्रयास करने चाहिए। यह दृढ़ विश्वास सरदार पटेल की जीवन-गाथा में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने जिन नीतियों को अपनाया और निर्णय लिए उसने इतिहास में एक नया अध्याय लिखा। इतना ही नहीं, उन्होंने रियासतों का एकीकरण कर देश की एकता और सुरक्षा को मजबूत बनाया। किसानों, पिछड़ों और वंचितों को सहकारिता से जोड़कर देश को स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता की दिशा में भी अग्रसर किया, जिससे न्याय प्रधान और एकता के सूत्र में बंधे राष्ट्र का निर्माण संभव हो सका। गुजरात के केवड़िया में राष्ट्रीय एकता दिवस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि सरदार पटेल की जयंती स्वाभाविक रूप से राष्ट्रीय एकता का एक भव्य उत्सव बन चुकी है। जिस प्रकार 140 करोड़ भारतीय 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस और 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस मनाते हैं, उसी प्रकार एकता दिवस का महत्व भी अब उसी स्तर पर पहुंच गया है। आज करोड़ों लोगों ने एकता की शपथ ली है और राष्ट्र की एकता को मजबूत करने वाले कार्यों को बढ़ावा देने का संकल्प लिया है।

सरदार पटेल भारत के एकीकरण के पीछे प्रेरक शक्ति थे और वह देश की आजादी के बाद प्रारंभिक वर्षों में देश के भाग्य को आकार दे रहे थे। राष्ट्रीय अखंडता, सुशासन और जनसेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता अटूट थी। पीएम मोदी ने स्पष्ट किया कि 2014 के बाद, राष्ट्र ने एक बार फिर सरदार पटेल से प्रेरित दृढ़ संकल्प देखा। आज

...पीएम मोदी को ऐसे निर्णयों पर है गर्व

- सरदार पटेल के सम्मान में स्टैच्यू ऑफ यूनिटी के निर्माण और बाबा साहेब अंबेडकर को समर्पित पंचतीर्थ की स्थापना।
- सभी पूर्व प्रधानमंत्रियों के योगदान को सम्मान देने के लिए प्रधानमंत्री संग्रहालय का निर्माण।
- कर्पूरी ठाकुर और प्रणब मुखर्जी भारत रत्न से सम्मानित। मुलायम सिंह यादव जैसे नेता पद्म पुरस्कारों से सम्मानित।

भारत की एकता के 4 आधारभूत स्तंभ

- प्रथम : सांस्कृतिक एकता
- दूसरा : भाषाई एकता
- तीसरा : भेदभाव मुक्त विकास
- चौथे स्तंभ : कनेक्टिविटी के माध्यम से दिलों को जोड़ना

केवड़िया में विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास

केवड़िया में पीएम मोदी ने सरदार पटेल की 150वीं जयंती की पूर्व संध्या पर

1,219 करोड़ रुपये

की विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया।

इलेक्ट्रिक बसों के एक बेड़े को झंडी दिखाकर रवाना किया गया। इससे लोगों को आरामदायक और बेहतर परिवहन सुविधाएं मिलेंगी।

- इन परियोजनाओं में भगवान बिरसा मुंडा को समर्पित एक प्रतिष्ठित केंद्र, बिरसा मुंडा भवन, कर्मचारियों के लिए एक आवासीय परिसर, आतिथ्य क्षेत्र का पहला चरण और एक बोनसाई उद्यान शामिल है।
- एक विशेष स्मारक सिक्का और डाक टिकट जारी। पीएम मोदी ने सरदार पटेल के परिवार के सदस्यों से भी भेंट की।

"स्टैच्यू ऑफ यूनिटी भारत की एकता को लेकर उनकी संकल्पना का सशक्त प्रतीक है। यह हमारे राष्ट्रीय गौरव और सरदार पटेल के सपनों को साकार करने के सामूहिक संकल्प की प्रेरणा शक्ति भी है।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

एकता दिवस की दिलाई शपथ

- प्रधानमंत्री मोदी ने सरदार वल्लभभाई पटेल की प्रतिमा को पुष्पांजलि अर्पित की, एकता दिवस की शपथ दिलाई।
- परेड में सीआरपीएफ के पांच शौर्य चक्र विजेताओं और बीएसएफ के सोलह वीरता पदक विजेताओं को भी सम्मानित किया गया।
- परेड में एनएसजी, एनडीआरएफ, गुजरात, जम्मू-कश्मीर, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, मणिपुर, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उत्तराखंड और पुडुचेरी की झांकियां शामिल थीं।
- 900 कलाकारों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम में भारतीय संस्कृति की समृद्धि और विविधता को दर्शाने वाले शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुति की गई।

जम्मू-कश्मीर अनुच्छेद 370 की बेड़ियों से मुक्त हो गया है और पूरी तरह से मुख्यधारा में शामिल हो गया है। पाकिस्तान और आतंकवाद के आकाओं को भी अब भारत की असली क्षमता का एहसास हो गया है। ऑपरेशन सिंदूर का उल्लेख करते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पूरी दुनिया ने देखा है कि अगर कोई भारत को चुनौती देने की हिम्मत करता है, तो देश दुश्मन की जमीन पर हमला करके जवाब देता है। भारत की प्रतिक्रिया हमेशा मजबूत और निर्णायक रही है। यह भारत के दुश्मनों के लिए एक संदेश है- "यह लौह पुरुष सरदार पटेल का भारत है और यह अपनी सुरक्षा और सम्मान से कभी समझौता नहीं करेगा।"■

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

छत्तीसगढ़ से भारत के विकास का घोष

25 साल पहले तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के छोटे राज्यों से बड़े विकास के विजन से जन्मा छत्तीसगढ़ प्रगति की मिसाल बन चुका है। इस उज्ज्वल यात्रा को नमन करते हुए पीएम नरेंद्र मोदी ने राज्योत्सव के अवसर पर 14 हजार करोड़ रुपये से अधिक की दीं सौगातें...

कभी नक्सलवाद की चुनौती और सुदूर इलाकों के साथ बुनियादी सुविधाओं की कमी से जूझने वाला छत्तीसगढ़ आज भारत की विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण सहभागी बन चुका है। 25 साल की परिवर्तन यात्रा की गूंज 1 नवंबर को नवा रायपुर में आयोजित रजत जयंती समारोह में सुनाई दी, जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छत्तीसगढ़ की उपलब्धियों को पूरे देश के सामने रेखांकित किया। एक कार्यकर्ता से लेकर बतौर देश के प्रधानमंत्री तक छत्तीसगढ़ की इस विकास यात्रा को देखने वाले पीएम मोदी ने कहा कि जब छत्तीसगढ़ बना था, तब गांवों तक पहुंचना मुश्किल था। उस समय बहुत सारे गांवों में सड़कों का नामों-निशान तक नहीं था। अब यहां गांवों में सड़कों का नेटवर्क 40 हजार किमी तक पहुंचा है। विकास पथ पर आगे बढ़ते भारत के साथ छत्तीसगढ़ की सहभागिता का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि बीते 11 वर्षों में छत्तीसगढ़ में नेशनल हाईवे का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। पहले सिर्फ एक मेडिकल कॉलेज था, आज 14 हैं। रायपुर में एम्स है। करीब साढ़े पांच हजार से अधिक आयुष्मान आरोग्य मंदिर हैं। रायपुर, बिलासपुर और जगदलपुर जैसे शहर डायरेक्ट फ्लाइट से कनेक्टेड हैं। सिर्फ कच्चे माल के निर्यातक की बजाय छत्तीसगढ़ अब औद्योगिक राज्य के रूप में नई भूमिका में सामने आ रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने माओवाद और नक्सलवाद के साये से मुक्त होकर अब विकास के स्वर्णिम अध्याय की आगे बढ़ते छत्तीसगढ़ की परिवर्तन गाथा का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि बीते 50-55 साल तक इनकी वजह से राज्य ने बहुत कुछ झेला। आदिवासी इलाके सड़कों से वंचित रहे। बच्चों को स्कूल नहीं मिले, मरीजों को अस्पताल नहीं मिले। डॉक्टरों को, शिक्षकों को मार दिया जाता था। पीएम मोदी ने कहा कि 2014 में हमने पूरे देश को माओवाद-नक्सलवाद से मुक्ति दिलाने

स्टार्टअप ग्राम उद्यमिता ब्लॉक से लेकर घर, सड़क और बिजली परियोजनाओं तक की सौगात

प्रधानमंत्री मोदी ने राज्य में 14,260 करोड़ रुपये से अधिक की विकास से जुड़ी और परिवर्तनकारी परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। इनमें पूरी तरह सौर ऊर्जा संचालित नए विधानसभा भवन के साथ शहीद वीर नारायण सिंह जनजातीय स्वतंत्रता सेनानी संग्रहालय और पीएम आवास योजना के तहत 3.51 लाख नए मकान भी शामिल...

- छत्तीसगढ़ के 9 जिलों में 12 नए स्टार्ट-अप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम ब्लॉक का उद्घाटन।
- पीएम आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत 3 लाख लाभार्थियों को किस्त के रूप में 1,200 करोड़ रुपये जारी किए।
- बस्तर और नारायणपुर जिलों के कई खंडों में फैले राष्ट्रीय राजमार्ग-130डी (नारायणपुर-कस्तूरमेटा-कुतुल-नीलांगुर-महाराष्ट्र सीमा) के निर्माण और उन्नयन की आधारशिला रखी गई।
- रायपुर में एचपीसीएल के अत्याधुनिक पेट्रोलियम तेल डिपो, 489 किलोमीटर लंबी नागपुर-झारसुगुड़ा प्राकृतिक गैस पाइपलाइन समर्पित की गई।
- जांजगीर-चांपा जिले के सिलादेही-गतवा-बिर्रा व राजनांदगांव जिले के बिजलेटला में दो स्मार्ट औद्योगिक क्षेत्र, नवा रायपुर में एक फार्मास्युटिकल पार्क और मनेन्द्रगढ़, कबीरधाम, जांजगीर-चांपा, दंतेवाड़ा के गीदम में मेडिकल कॉलेज व बिलासपुर में आयुर्वेद कॉलेज के साथ अस्पताल की भी आधारशिला रखी गई।

ग्रीनफील्ड हाईवे

- पत्थलगांव-कुनकुरी से छत्तीसगढ़-झारखंड सीमा तक चार लेन वाले ग्रीनफील्ड हाईवे की आधारशिला रखी गई।
- यह रणनीतिक गलियारा कोरबा, रायगढ़, जशपुर, रांची और जमशेदपुर में प्रमुख कोयला खदानों, औद्योगिक क्षेत्रों और इस्पात संयंत्रों को जोड़ेगा।

1,600

मेगावाट बढ़ी पूर्वी और पश्चिमी ग्रिडों के बीच अंतर-क्षेत्रीय विद्युत हस्तांतरण क्षमता। अंतर-क्षेत्रीय ईआर-डब्ल्यूआर इंटरकनेक्शन परियोजना का उद्घाटन के बाद।

5,610

करोड़ रुपये की लागत वाली कई नई व आपूर्ति सुधार वाली परियोजनाओं का लोकार्पण व शिलान्यास। 480 करोड़ की लागत से निर्मित नौ नए बिजली सबस्टेशनों का भी उद्घाटन किया गया।

का संकल्प लिया। नतीजा सामने है, 2014 तक देश के 125 से ज्यादा जिले माओवाद से पीड़ित थे, अब केवल कुछ जिलों में ही इनकी मौजूदगी रह गई है। छत्तीसगढ़ में जहां कभी बम-बंदूक का डर था, वहां हालात बदल गए हैं। बीजापुर के चिलकापल्ली गांव में सात दशकों के बाद पहली बार बिजली पहुंची। अबूझमाड़ के रेकावया गांव में आजादी के बाद पहली बार स्कूल बनाने का काम शुरू हुआ है। लाल झंडे की जगह अब तिरंगा शान से लहरा रहा है।

जन्मजात हृदय रोग से ठीक हुए बच्चों से पीएम ने की 'दिल की बात'

पीएम नरेंद्र मोदी ने नवा रायपुर स्थित श्री सत्य साईं संजीवनी अस्पताल में 'दिल की बात' कार्यक्रम के तहत आयोजित 'गिफ्ट ऑफ लाईफ' सेरेमनी कार्यक्रम में जन्मजात हृदय रोगों का सफलतापूर्वक इलाज करा चुके 2,500 बच्चों से भी बातचीत की। एक युवा हॉकी चैंपियन ने बताया कि उसने 5 पदक जीते थे और स्कूल में चेक अप के दौरान उसे दिल की बीमारी का पता चला था। 6 महीने पहले उनकी सर्जरी हुई थी और इसके बाद अब वह हॉकी खेलना जारी रख रही हैं। प्रधानमंत्री ने उनकी आकांक्षाओं के बारे में पूछा, जिस पर उन्होंने जवाब दिया कि वह डॉक्टर बनना चाहती हैं और सभी बच्चों का इलाज करना चाहती हैं। बच्चों से बातचीत के दौरान पीएम मोदी ने कहा कि किसी भी अच्छे कार्य को पूरा करने के लिए स्वस्थ शरीर आवश्यक है। उन्होंने बच्चों को योग और नियमित अनुशासित नींद की दिनचर्या के माध्यम से अपने स्वास्थ्य को बनाए रखने की सलाह दी।■

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष

इतिहास की धारा को दी नई दिशा

अपनी स्थापना से लेकर आज तक आर्य समाज ने इतिहास की धारा को नई दिशा दी है। आर्य समाज निर्भीक होकर भारतीयता की बात करती रही है। इसी संस्था के अंतरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पूरे भारत की वैदिक पहचान से जुड़े हैं आर्य समाज के 150 वर्ष...

हमारे वेदों का वाक्य है- "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्", अर्थात्, हम पूरे विश्व को श्रेष्ठ बनाएं, उसे श्रेष्ठ विचारों की ओर लेकर जाएं। स्वामी दयानन्द ने इसी वेदवाक्य को आर्य समाज का ध्येय वाक्य बनाया। आज यही वेदवाक्य भारत की विकास यात्रा का मूलमंत्र भी है। भारत के विकास से विश्व का कल्याण, भारत की समृद्धि से मानवता की सेवा, देश इसी विजन पर आगे बढ़ रहा है। आज भारत सतत विकास की दिशा में एक प्रमुख ग्लोबल वॉइस बन चुका है। जिस तरह स्वामी जी ने वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया उसी तरह, आज भारत वैदिक जीवन पद्धति और आदर्शों की ओर लौटने की बात ग्लोबल स्टेज पर कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते हैं कि इसके लिए हमने मिशन LiFE लॉन्च किया है। पूरे विश्व से इसे सपोर्ट मिल रहा है। एक सूर्य, एक विश्व, एक ग्रिड विजन के जरिए हम क्लीन एनर्जी को भी एक ग्लोबल मूवमेंट में बदल रहे हैं। इतना ही नहीं अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के जरिए आज योग भी दुनिया के 190 से ज्यादा देशों में पहुंच चुका है।

युगदृष्टा महापुरुष थे स्वामी दयानंद सरस्वती

सदियों की गुलामी से पूरा देश और समाज टूट चुका था। जब अंग्रेज, भारत की परंपराओं और मान्यताओं को नीचा दिखाते थे उस मुश्किल समय में, एक युवा संन्यासी आते हैं। एक ऐसे संन्यासी जो हिमालय के निर्जन और कठिन स्थानों में साधना करते हैं, खुद को तपस्या की कसौटी पर कसते हैं और हीन-भावना में फंसे भारतीय समाज को झकझोरते हैं। आत्मविश्वास से भरे वो ऋषि अपने समाज से आह्वान करते हैं -वेदों की ओर लौटो। ऐसी अद्भुत विभूति कोई और नहीं युगदृष्टा महापुरुष स्वामी दयानंद थे। उन्होंने गुलामी के उस कालखंड में दबी-कुचली राष्ट्र की चेतना को फिर से जागृत कर दिया। साथ ही, उन्होंने ऊंच-नीच, छुआछूत और भेदभाव का खंडन किया। उन्होंने अशिक्षा के खिलाफ अभियान छेड़ा और वेदों एवं शास्त्रों की गलत व्याख्या व उसमें मिलावट करने वालों को ललकारा। उन्होंने विदेशी धारणाओं को भी चुनौती दी और शास्त्रार्थ की पुरानी परंपरा से सत्य को सिद्ध किया। इतना ही नहीं, उन्होंने महिलाओं को घर की चौखट तक सीमित समझने वाली सोच को चुनौती दी और आर्य समाज के स्कूलों में लड़कियों को शिक्षा देने का अभियान शुरू किया।

आर्य समाज : समाजिक सुधार और राष्ट्र निर्माण में अग्रणी

- आर्य समाज ने सुधार की महान परंपरा को निरंतर आगे बढ़ाया। साथ ही, आजादी की लड़ाई में स्वतंत्रता सेनानियों को वैचारिक ऊर्जा दी।
- लाला लाजपतराय, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे अनेकों क्रांतिकारियों ने आर्यसमाज से प्रेरणा लेकर आजादी की लड़ाई में अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया था।
- भारत विरोधी कोई भी सोच हो, विदेशी विचारधाराओं को थोपने वाले लोग हों, विभाजनकारी मानसिकता हो, सांस्कृतिक गड़बड़ी करने का दुष्प्रयास हो, आर्य समाज ने हमेशा उसको चुनौती दी।
- स्वामी श्रद्धानंद जैसे आर्य समाज के अनेक मनीषियों ने धर्म जागरण के जरिए इतिहास की धारा को एक नई दिशा दी।
- गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, डीएवी संस्थान एवं अन्य शैक्षणिक संस्थान, ये सभी अपने-अपने क्षेत्रों में लगातार काम कर रहे हैं।

"आज, जब राष्ट्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षा को फिर से मूल्यों और चरित्र निर्माण से जोड़ रहा है, मैं आर्य समाज का आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने भारत की ज्ञान की पवित्र परंपरा को संरक्षित किया।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

वेद हमें सिखाता है - "संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्"। अर्थात्, हम एक साथ चलें, एक साथ बोलें और एक दूसरे के मन को जानें। यानी, एक दूसरे के विचारों का सम्मान करें। पीएम मोदी कहते हैं कि वेदों के इसी आह्वान को हमें राष्ट्र के आह्वान के रूप में भी देखना है और देश के संकल्पों को अपना संकल्प बनाना है। हमें जनभागीदारी की भावना से सामूहिक प्रयासों को आगे बढ़ाना है। इन डेढ़ सौ वर्षों में आर्य समाज ने इसी भावना से काम किया है जिसे हमें निरंतर सशक्त करना है। मुझे विश्वास है, महर्षि दयानंद सरस्वती के विचार, इसी तरह मानवता के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

आर्य समाज की देशी-विदेशी इकाइयों के प्रतिनिधि हुए शामिल

अंतरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2025 कार्यक्रम महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती और आर्य समाज की समाज सेवा के 150 वर्षों के उपलक्ष्य में आयोजित ज्ञान ज्योति महोत्सव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा। यह शिखर सम्मेलन भारत और विदेशों में आर्य समाज की इकाइयों के प्रतिनिधियों को एक साथ लाने का मंच बना, जो महर्षि दयानंद के सुधारवादी आदर्शों और संगठन की वैश्विक पहुंच की सार्वभौमिक प्रासंगिकता को दर्शाता है। इसमें 'सेवा के 150 स्वर्णिम वर्ष' शीर्षक से एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। प्रदर्शनी में शिक्षा, सामाजिक सुधार और आध्यात्मिक उत्थान में आर्य समाज के योगदान को प्रदर्शित किया गया।

शिखर सम्मेलन का उद्देश्य महर्षि दयानंद सरस्वती की सुधारवादी और शैक्षिक विरासत का सम्मान करना, सामाजिक सुधार और राष्ट्र निर्माण में आर्य समाज की 150 वर्षों की सेवा का उत्सव मनाना था। साथ ही, विकसित भारत 2047 के अनुरूप वैदिक सिद्धांतों और स्वदेशी मूल्यों को लेकर वैश्विक स्तर पर प्रेरित करना था।■

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

भारत में अब... ईज ऑफ डूइंग रिसर्च पर फोकस

भारत ने अंतरिक्ष अनुसंधान से लेकर क्वांटम टेक्नोलॉजी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से लेकर सेमीकंडक्टर निर्माण तक, स्वच्छ ऊर्जा से लेकर अनेक अनुसंधान तक अपनी विशेष पहचान बनाई है। इन्हीं वैज्ञानिक उपलब्धियों के महाकुंभ उभरते विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2025 का 3 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया उद्घाटन... और 1 लाख करोड़ रुपये के अनुसंधान विकास एवं नवाचार योजना कोष का किया शुभारंभ...

> भारत में इनोवेशन का आधुनिक इकोसिस्टम बने... इसके लिए हम ईज ऑफ डूइंग रिसर्च पर फोकस कर रहे हैं। इस दिशा में हमारी सरकार ने वित्तीय नियमों और खरीद नीतियों में कई सुधार किए हैं। विनियमन, प्रोत्साहन और आपूर्ति श्रृंखलाओं में भी सुधार किए हैं, ताकि प्रोटोटाइप जल्द से जल्द लैब से निकलकर मार्केट तक पहुंचे।
>
> **- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री**

Imagine. Innovate. Inspire. for Viksit Bharat 2047

Emerging Science, Technology, and Innovation Conclave ESTIC 2025

भारत के लिए विज्ञान और तकनीक राष्ट्रीय प्रगति के मजबूत आधार बन गए हैं। खासकर पिछले 11 वर्षों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नवाचार को विशेष बढ़ावा दिया गया है। आत्मनिर्भरता को मजबूत किया है और ग्लोबल पहचान को आकार दिया है। जैसे-जैसे देश विकसित भारत 2047 के परिवर्तकारी दृष्टि की ओर बढ़ रहा है, राष्ट्र नित नए आयाम हासिल कर रहा है। भारत का उभरता विज्ञान, तकनीक और नवाचार मिलकर एक नया इतिहास रच रहा है। इन्हीं नए आयाम की वैश्विक स्तर पर मजबूत पहचान और रास्ता तय करने की दिशा में भारत ने कदम बढ़ाया है। इसी कड़ी में नई दिल्ली के भारत मंडपम में 11 थिमैटिक ट्रैक के माध्यम से 3-5 नवंबर तक उभरते विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं नवाचार सम्मेलन 2025 आयोजित किया गया है। कार्यक्रम में नोबेल पुरस्कार विजेता सर आंद्रे गाइम भी शामिल हुए।

किसी भी राष्ट्र का सर्वोच्च दूरदर्शी नेता जब विज्ञान, तकनीक, अनुसंधान और नवाचार को इतनी प्राथमिकता देता है तब वैज्ञानिकों, इनसे जुड़ी संस्थाओं को यह साफ संदेश जाता है कि उनकी मेहनत और सोच भारत के भविष्य को आकार देने में अहम भूमिका निभा रही हैं। इसी का परिणाम है कि 11 वर्ष पहले जब पीएम मोदी ने देश का नेतृत्व संभाला था तब जो सपना देखा था - भारत को विज्ञान और तकनीक की शक्ति से विकसित राष्ट्र बनाने का, वह विजन

अनुसंधान एवं विकास इकोसिस्टम को बढ़ावा देगा आरडीआई योजना कोष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में अनुसंधान एवं विकास इकोसिस्टम को प्रोत्साहन देने के लिए 1 लाख करोड़ रुपये के अनुसंधान विकास एवं नवाचार योजना कोष का शुभारंभ किया। पीएम मोदी कहते हैं कि साइंस में बदलाव की रफ्तार अब लीनियर नहीं बल्कि एक्सपोनेंशियल है। इसी सोच के साथ भारत उभरती साइंस टेक्नोलॉजी और नवाचार से जुड़े इन सभी पहलुओं को आगे बढ़ा रहा है। सरकार ने रिसर्च और डेवलपमेंट में नए मौकों के लिए एक लाख करोड़ रुपये के आरडीआई फंड को लॉन्च किया है। पहली बार, उच्च जोखिम और उच्च प्रभाव वाली परियोजनाओं के लिए पूंजी भी उपलब्ध कराई जा रही है। सरकार का मकसद सिर्फ सरकारी संस्थानों में ही नहीं, बल्कि प्राइवेट सेक्टर में भी इनोवेशन को बढ़ावा देना है। इस दिशा में, सरकार ने साइंटिफिक ग्रोथ को सपोर्ट करने के लिए पहले ही फाइनेंशियल नियमों और खरीद नीतियों में सुधार किए हैं।

भारत की महिलाएं...

- दुनिया में जब भारत के स्पेस मिशन की बात होती है, तो उसमें भारतीय महिला वैज्ञानिकों की चर्चा बहुत ज्यादा होती है।
- एक दशक पहले महिलाओं द्वारा पेटेंट फाइलिंग 100 से कम थी जो अब सालाना 5 हजार से भी ज्यादा तक पहुंच गई है।

स्टेम एजुकेशन में भी महिलाओं का शेयर करीब **43%** जो वैश्विक औसत से भी ज्यादा है।

बच्चे और युवा...

- विज्ञान, तकनीक और नवाचार की दिशा में देश युवाओं को तेजी से आगे बढ़ाने का काम कर रहा है।
- इसी सोच के साथ 10 हजार अटल टिंकरिंग लैब बनाई गई हैं।
- इनमें 1 करोड़ से ज्यादा बच्चे जिज्ञासा और सृजनशीलता के साथ एक्सपेरिमेंट कर रहे हैं।

विशेषज्ञों के लिए छोड़ी चुनौती...

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सम्मेलन में विशेषज्ञों के सामने यह बात रखी कि उभरते क्षेत्रों में दोगुनी ऊर्जा से काम करें। ये विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए भी बहुत अहम है। खाद्य सुरक्षा से आगे बढ़कर पोषण सुरक्षा के लिए अगली पीढ़ी की बायोफोर्टिफाइड फसलें विकसित कर कुपोषण के खिलाफ लड़ाई में दुनिया की मदद करें। कम लागत वाले मिट्टी स्वास्थ्य संवर्धक, जैव उर्वरकों में ऐसे नवाचार कर रासायनिक तत्वों के विकल्प तैयार करने की अपील भी की। भारत की जीनोमिक विविधता को और प्रभावी ढंग से मैप कर व्यक्तिगत उपचार और रोग पूर्वानुमान के क्षेत्र को नई दिशा देने की चुनौती रखने के साथ ही कहा कि स्वच्छ ऊर्जा भंडारण में नए और किफायती नवाचार विकसित करने सहित कुछ अन्य सुझाव भी रखे ताकि हमारी दुनिया पर से निर्भरता घटे और इन क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता हासिल की जा सके।

आज 11 साल बाद साकार रूप ले रहा है। इसी विश्वास की वजह से पीएम मोदी अब मंच से कह रहे हैं कि भारत आज, नैतिक और मानव-केंद्रित कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के लिए वैश्विक ढांचे को आकार दे रहा है। भारत अब टेक्नोलॉजी का कंज्यूमर नहीं, बल्कि टेक्नोलॉजी के जरिये ट्रांसफॉर्मेशन का पायनियर बन चुका है। आज दुनिया का सबसे सफल डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर भारत के पास है। 2 लाख ग्राम पंचायतों को ऑप्टिकल फाइबर से जोड़ा है।■

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

भारत का विकास वैश्विक अवसरों को दे रहा आकार

भारत न रुकेगा और न थमेगा क्योंकि 140 करोड़ भारतीय एक साथ तेजी से बढ़ रहे हैं आगे...अक्टूबर में आयोजित एनडीटीवी वर्ल्ड समिट में पीएम मोदी ने दिया संदेश...

भारत की औसत विकास दर पिछले तीन वर्षों में 7.8 प्रतिशत रही है, जो देश के तेज गति से आर्थिक विकास को दर्शाता है। कुछ दिन पहले वाणिज्यिक निर्यात के आंकड़े जारी किए गए हैं जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 7% की वृद्धि दर्शाते हैं। वहीं पिछले वर्ष भारत ने लगभग 4.5 लाख करोड़ रुपये का कृषि निर्यात किया। कई देशों की अस्थिर रेटिंग के बीच स्टैंडर्ड एंड पूअर्स ग्लोबल (एसएंडपी) ने 17 वर्षों बाद भारत की क्रेडिट रेटिंग में सुधार किया है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने भी भारत के विकास के आउटलुक को संशोधित कर ऊपर की ओर बढ़ाया है। कुछ दिन पहले ही गूगल ने भारत के कृत्रिम बुद्धिमता क्षेत्र में अब 15 अरब डॉलर के बड़े निवेश की घोषणा की है वहीं भारत-यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (ईएफटीए) व्यापार समझौते के तहत यूरोपीय देशों ने भारत में 100 अरब डॉलर के निवेश की प्रतिबद्धता जताई है। यही नहीं, हरित ऊर्जा और सेमीकंडक्टर के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण निवेश किए जा रहे हैं।

दिल्ली में आयोजित एनडीटीवी शिखर सम्मेलन में 'अजेय भारत' थीम की सराहना करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज का भारत रुकने के मूड में नहीं है। विविध बाधाओं और गतिरोध का सामना कर रहे विश्व में 'अजेय भारत' पर चर्चा स्वाभाविक है। भारत ने सदियों से अनजान रास्तों पर चलने का साहस दिखाया है। संतों, वैज्ञानिकों और नाविकों ने लगातार यह सिद्ध किया है कि 'पहला कदम' परिवर्तन की शुरुआत का प्रतीक है। वर्ष 2014 से

यूं हो रहा है नागरिकों का जीवन आसान

1 जीबी डेटा की कीमत अब केवल 10 रुपये है, वर्ष 2014 से पहले 300 रुपये थी।

2.5 लाख करोड़ रुपये आयकर कम करने और जीएसटी में सुधार से नागरिकों के बचे।

1.25 लाख करोड़ रुपये की बचत आमजन को हुई है आयुष्मान भारत योजना से।

50% दुनिया का रीयल-टाइम डिजिटल लेनदेन भारत में हो रहा है।

40 हजार करोड़ रुपये की बचत हुई पीएम जन औषधि केंद्रों के माध्यम से।

42 करोड़ से ज्यादा ओपीडी परामर्श ई-संजीवनी एप से मरीजों को मिले।

12 हजार करोड़ रुपये की बचत हुई है स्टेंट की कीमत कम होने से।

11 जिले अब माओवाद से प्रभावित जबकि 11 वर्ष पहले 125 से ज्यादा जिले थे।

10 करोड़ से अधिक परिवारों को मुफ्त गैस कनेक्शन

आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के जीवन को आसान बनाने के लिए वर्तमान केंद्र सरकार ने 10 करोड़ से अधिक परिवारों को मुफ्त गैस कनेक्शन दिया है। जबकि एक समय था गैस कनेक्शन प्राप्त करने के लिए भी सांसदों के अनुशंसा पत्रों की आवश्यकता होती थी। एक दशक पूर्व ईंधन सब्सिडी में वृद्धि से बचने के लिए रात 8 से सुबह 8 बजे तक पेट्रोल पंप बंद करने की तैयारी की गई थी। इसके विपरीत वर्तमान सरकार अब वैकल्पिक ईंधन और इलेक्ट्रिक मोबिलिटी में अभूतपूर्व निवेश कर रही है।

"हमने हर रिस्क को रिफॉर्म में...हर रिफॉर्म को रेजिलिएंस में...और हर रेजिलिएंस को रिवोल्यूशन में बदला है।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

पहले की चुनौतियों का जिक्र करते हुए पीएम मोदी ने कहा उस दौर में 'महंगाई डायन खाए जा रही है' जैसे महंगाई पर विलाप करने वाले गीत सुने जाते थे। उस समय देश के नागरिकों और वैश्विक समुदाय, दोनों को लग रहा था कि संकटों के जाल में फंसा भारत इससे उबर नहीं पाएगा लेकिन पिछले 11 वर्षों में भारत ने इस संदेह को दूर कर हर चुनौती पर विजय प्राप्त की है।

भारत कमजोर पांच की श्रेणी से निकलकर दुनिया की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन गया है। मुद्रास्फीति अब दो प्रतिशत से नीचे है जबकि विकास दर 7% से अधिक है। चिप से लेकर जहाज तक, आत्मनिर्भर भारत का विश्वास सभी क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से नजर आ रहा है। जी-7 देशों के साथ भारत के व्यापार में 60% से अधिक की वृद्धि हुई है। दुनिया अब भारत को एक विश्वसनीय, जिम्मेदार और लचीले साझेदार के रूप में देखती है। इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर फार्मास्यूटिकल्स तक और ऑटोमोबाइल से लेकर मोबाइल निर्माण तक, भारत में निवेश की लहर चल रही है।

पीएम मोदी ने कहा कि 1960 के दशक में तत्कालीन प्रधानमंत्री ने बैंकों के राष्ट्रीकरण को यह कहकर उचित ठहराया था कि इससे बैंकिंग सेवाओं का विस्तार गरीबों, किसानों और मजदूरों तक होगा। हालांकि, वास्तव में, तत्कालीन सत्तारूढ़ दल ने बैंकों को लोगों से इस हद तक दूर कर दिया था कि गरीब लोग बैंक के दरवाजे तक जाने से डरते थे। वर्ष 2014 में भारत की आधी से ज्यादा आबादी के पास बैंक खाता नहीं था लेकिन केंद्र की वर्तमान सरकार ने मिशन मोड में 50 करोड़ से अधिक जन धन खाते खोले। यही नहीं आज भारत के प्रत्येक गांव में कम से कम एक बैंकिंग टचप्वाइंट है। इसका परिणाम यह हुआ है कि पिछले 11 वर्ष में, महिला स्वयं सहायता समूहों, छोटे किसानों, पशुपालकों, मछुआरों, रेहड़ी-पटरी वालों और विश्वकर्मा कामगारों को बिना बैंक गारंटी के लाखों करोड़ रुपये के ऋण दिए गए हैं।■

प्रधानमंत्री का पूरा कार्यक्रम देखने के लिए QR कोड स्कैन करें।

राष्ट्र सेवा, जनसेवा, प्रकृति सेवा में सब कुछ समर्पित

पीएम मोदी के उपहार समर्पण की नई तस्वीर

राज्य व राष्ट्र के मुखिया के तौर पर अपने वेतन से बचाई गई, पुरस्कारों एवं स्मृति चिन्ह की नीलामी से जुटाई गई राशि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जनसेवा और प्रकृति सेवा में समर्पित करते हैं। इसी कड़ी में उनके उपहार व स्मृति चिन्हों की नीलामी के 7वें संस्करण से जुटाई गई राशि भी की गई नमामि गंगे परियोजना को समर्पित...

'मेरे जीवन का क्षण-क्षण और मेरे शरीर का कण-कण देश और देशवासियों की सेवा में समर्पित करने का मैं संकल्प करता हूं'। यह वाक्य प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने न सिर्फ कई मौकों पर दोहराया है बल्कि इस भावना को जी भी रहे हैं। पीएम मोदी ने अभी तक वेतन से बचाए गए पैसे, उपहार और स्मृति चिन्हों की नीलामी से जुटाई गई राशि और पुरस्कार में मिली 100 करोड़ रुपये से अधिक की राशि लोक कल्याण के लिए भेंट कर जनकल्याण और समर्पण की नई तस्वीर पेश की है। पीएम मोदी अपने 25 वर्ष के शासन प्रमुख रहते हुए अपने जीवन में न सिर्फ राष्ट्र सेवा को समर्पित रहे हैं बल्कि वास्तव में अपने संकल्प के अनुरूप अपना क्षण-क्षण और उपहार में मिला कण-कण मां गंगा की सेवा में सपर्मित करते रहे हैं। इसी कड़ी में संस्कृति मंत्रालय ने प्रधानमंत्री मोदी के स्मृति चिन्हों की नीलामी के 7वां संस्करण को लॉन्च किया जिसमें 1,300 से अधिक उपहारों को रखा गया।

17 सितंबर से 31 अक्टूबर तक इन स्मृति चिन्ह और पुरस्कारों के लिए ऑनलाइन बोली लगाने वाले काफी लोग जुटे। भगवान तिरुपति बालाजी के लिए सबसे अधिक 179 लोगों ने बोली लगाई तो अर्धनारीश्वर की धातु की प्रतिमा और श्री वेंकटेश्वर

खर्च में कटौती और उपहार नीलामी की राशि पीएम मोदी करते हैं दान

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को 41वां लोकमान्य तिलक राष्ट्रीय पुरस्कार मिला। इसमें मिली एक लाख रुपये की राशि पीएम ने नमामि गंगे परियोजना में दान कर दी।

- गुजरात में मुख्यमंत्री के रूप में अपना कार्यकाल पूरा होने के बाद बचत की राशि में से 21 लाख रुपये राज्य के सरकारी कर्मचारियों की बच्चियों की शिक्षा के लिए दान दिए।
- पीएम मोदी ने मुख्यमंत्री के रूप में मिले सभी उपहारों की नीलामी कर 89.96 करोड़ रुपये जुटाए और इसे कन्या केलावणी कोष में दान कर दिया जो बालिकाओं की शिक्षा पर खर्च किया गया।
- पीएम मोदी के शुरुआती कार्यकाल के दौरान मिले स्मृति चिन्हों की नीलामी से 3.4 करोड़ रुपये जुटाए गए जो नमामि गंगे मिशन में दान दी।
- पीएम मोदी ने वर्ष 2015 में तब तक मिले उपहारों की नीलामी सूरत में कराई थी। उस नीलामी से जुटाई गई 8.33 करोड़ रुपये की राशि भी नमामि गंगे मिशन में दान दी थी।
- पीएम मोदी ने कोविड महामारी के दौरान अपने खर्च में कटौती से जुटाई गई 2.25 लाख रुपये की राशि दान की।
- सिओल शांति पुरस्कार में मिली 1.3 करोड़ रुपये की राशि नमामि गंगे मिशन में दान दी थी।
- कुंभ मेले के सफाई कर्मचारियों के कल्याण के लिए अपनी व्यक्तिगत बचत में से 21 लाख रुपये उनके कल्याण फंड में दान दिए।

नीलामी में जिसकी लगी सबसे बड़ी बोली

दैवीय द्वैत और उत्कृष्ट शिल्पकला वाली अत्यंत सुंदर अर्धनारीश्वर की धातु की प्रतिमा भगवान शिव और उनकी अर्धांगिनी पार्वती का संयुक्त रूप है। इस उपहार के लिए न्यूनतम बोली राशि 1.10 लाख रुपये रखी गई थी जो 31 बोली में 15 लाख रुपये तक पहुंच गई।

दूसरी सबसे बड़ी बोली प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भेंट की गई श्री वेंकटेश्वर बालाजी की सुंदर प्रतिमा के लिए लगाई गई। इसकी नीलामी भी 1.10 लाख रुपये से शुरू हुई जो 36वीं बोली में 15 लाख रुपये तक पहुंची।

इन्हें सबसे अधिक लोग ले जाना चाहते थे अपने घर

भगवान तिरुपति बालाजी का स्मृति-चिह्न: कलात्मक कौशल और भगवान तिरुपति बालाजी के रजत रंग वाले स्मृति-चिह्न के लिए सबसे अधिक 179 लोग नीलामी में शामिल हुए। इसकी नीलामी की शुरुआत कीमत 27,500 रखी गई थी जो अंतिम बोली में 1,26,100 रुपये तक पहुंची।

राम दरबार: प्रधानमंत्री मोदी को उपहार में मिली चांदी की राम दरबार की मूर्ति को 176 लोगों ने अपने घर ले जाने की इच्छा जताई। इसकी बेस कीमत 22 हजार रुपये रखी गई थी जो 176वीं बोली में 1,05,100 रुपये पहुंच गई।

कानी पश्मीना शॉल की कीमत 2.20 लाख पहुंची: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भेंट में मिली कानी पश्मीना शॉल कश्मीर की बुनकरी कला का अद्वितीय उदाहरण है जो हथकरघे पर पश्मीना ऊन से बुनी गई है। इस शॉल की ई-नीलामी 3,300 रुपये से शुरू हुई थी इसकी इतनी बोली लगाई कि 69वें नंबर पर बोली 2.20 लाख पहुंच गई।

बालाजी के लिए सबसे बड़ी 15-15 लाख रुपये की बोली लगाई गई। पहली नीलामी जनवरी 2019 में हुई थी। तब से, इससे पूर्व के 6 संस्करणों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भेंट किए गए करीब 9 हजार उपहारों को नीलामी के लिए रखा गया है। इनकी नीलामी से नमामि गंगे परियोजना के समर्थन में 50 करोड़ रुपये से अधिक की राशि जुटाई गई है। पीएम मोदी ऐसे पहले प्रधानमंत्री हैं जिन्होंने इस नेक काम के लिए सभी स्मृति चिन्हों को समर्पित किया है।■

ऐतिहासिक उपलब्धि

500 गीगावाट से अधिक हुई स्थापित ऊर्जा क्षमता

भारत में परमाणु ऊर्जा न सिर्फ स्वच्छ और सस्ती बिजली का स्रोत बन रही है बल्कि आत्मनिर्भर ऊर्जा की दिशा में भी अहम कदम बढ़ा रही है। परमाणु ऊर्जा देश की बढ़ती ऊर्जा जरूरतों को पूरा करते हुए खोल रही है भविष्य के विकास की नई संभावनाओं के द्वार...

भारत ने पिछले दिनों ऊर्जा क्षेत्र में दो ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल की हैं जो स्वच्छ, सुरक्षित और आत्मनिर्भर ऊर्जा की ओर बढ़ते देश की निरंतर प्रगति को दर्शाती हैं। देश में 30 सितंबर 2025 तक, कुल स्थापित ऊर्जा क्षमता 500 गीगावाट को पार कर 500.89 गीगावाट तक पहुंच गई है। यह उपलब्धि ऊर्जा क्षेत्र में वर्षों से चले आ रहे केंद्र सरकार की मजबूत नीतिगत निर्णय, निवेश और इच्छाशक्ति का परिणाम है।

परमाणु ऊर्जा क्षमता का होता विस्तार

- पिछले 10 साल में भारत की परमाणु ऊर्जा क्षमता में 70 प्रतिशत की बढ़ोतरी।
- वर्तमान में देश में उत्पादित कुल बिजली में परमाणु ऊर्जा का योगदान लगभग 3 प्रतिशत है।
- 2047 तक 100 गीगावाट परमाणु ऊर्जा क्षमता लक्ष्य के साथ देश आगे बढ़ रहा है।
- वर्ष 2024-25 में परमाणु ऊर्जा संयंत्रों से 56,681 मिलियन यूनिट बिजली का उत्पादन हुआ।

नवीकरणीय ऊर्जा के लिए यादगार दिन

29 जुलाई 2025 को भारत ने ऊर्जा उत्पादन में अपनी अब तक की सबसे अधिक नवीकरणीय ऊर्जा हिस्सेदारी तक पहुंचा। इस दिन, देश की कुल 203 गीगावाट बिजली की मांग का 51.5% नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से पूरा हुआ।

पहली बार, भारत की आधी से ज्यादा बिजली एक ही दिन में हरित स्रोतों से प्राप्त हुई, जो बदलाव का एक ऐतिहासिक संकेत है।■

वर्ष-2031-32 तक 22 हजार मेगावाट से अधिक परमाणु ऊर्जा का होगा उत्पादन

केंद्र सरकार ने 2047 तक 100 गीगावाट की परमाणु ऊर्जा क्षमता तक पहुंचने के लक्ष्य के साथ महत्वाकांक्षी परमाणु ऊर्जा मिशन की घोषणा की है। इस संबंध में, सरकार ने परमाणु ऊर्जा में सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर भागीदारी को बढ़ाने के लिए आवश्यक प्रक्रिया आरंभ कर दी है। वर्तमान में, देश में स्थापित परमाणु ऊर्जा क्षमता में 24 रिएक्टर शामिल हैं जिनकी क्षमता 8,780 मेगावाट (विस्तारित शटडाउन के तहत आरएपीएस-1 (100 मेगावाट) को छोड़कर) है। इसके क्रमिक रूप से पूरा होने पर, वर्ष 2031-32 तक परमाणु ऊर्जा क्षमता 22,380 मेगावाट तक पहुंचने की उम्मीद है।

नवीकरणीय ऊर्जा में हिस्सेदारी

सौर ऊर्जा	पवन ऊर्जा
127.33 गीगावाट	53.12 गीगावाट

100 गीगावाट परमाणु ऊर्जा क्षमता वर्ष 2047 तक हासिल करने का लक्ष्य।

तेजी से बढ़ रही स्वच्छ ऊर्जा की हिस्सेदारी

वित्त वर्ष 2025-26 (अप्रैल-सितंबर 2025) के दौरान, भारत ने 28 गीगावाट गैर-जीवाश्म क्षमता और 5.1 गीगावाट जीवाश्म ईंधन का उत्पादन किया है। यह उत्पादन क्षमता दर्शाता है कि स्वच्छ ऊर्जा का हिस्सा कितनी तेजी से बढ़ रहा है।

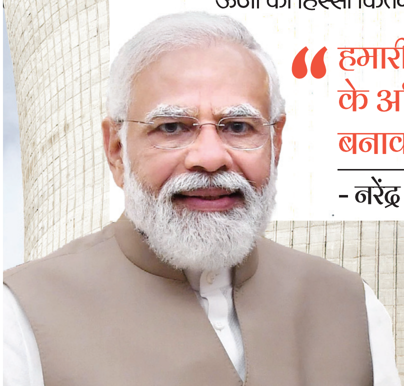

“हमारी सरकार स्वच्छ ऊर्जा के अभियान को एक जनआंदोलन बनाकर काम कर रही है।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

Narendra Modi
@narendramodi

हम देशभर के अपने किसान भाई-बहनों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसी दिशा में हमारी सरकार ने एक बड़ा कदम उठाते हुए 2025-26 के रबी सीजन के लिए फॉस्फोरस और पोटाश उर्वरकों पर सब्सिडी को मंजूरी दी है। इससे जहां अन्नदाताओं को किफायती दर पर उर्वरक उपलब्ध हो सकेंगे, वहीं उनकी कमाई भी बढ़ेगी।

रक्षा मंत्री कार्यालय/ RMO India
@DefenceMinIndia

हम सबने देखा, कि कैसे आकाश missile system, ब्रह्मोस, AkashTeer Air defence control System और अन्य कई प्रकार के indigenous equipment, platforms ने Operation Sindoor के दौरान अपना पराक्रम दिखाया। हमारे indigenous platforms की सफलता ने, न केवल regional बल्कि international level पर भी, भारत की साख को बढ़ाया है: रक्षा मंत्री श्री @rajnathsingh

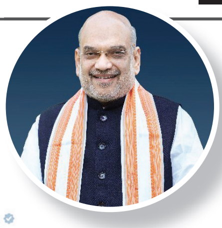

Amit Shah
@AmitShah

आजाद हिन्द फौज के स्थापना दिवस पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी और INA के वीर सेनानियों को नमन।

आजाद हिन्द फौज के माध्यम से नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी ने क्रांतिकारियों के मन में यह विश्वास प्रबल किया कि अपनी सेना और सैन्य अभियानों के बल पर देशवासी स्वाधीनता प्राप्त कर सकते हैं। नेताजी के नेतृत्व में वर्ष 1943 में ही अंडमान और निकोबार में तिरंगा फहराकर भारत की आजादी की घोषणा करने वाले INA के सेनानी अनंतकाल तक राष्ट्रप्रथम की प्रेरणा बने रहेंगे।

Nitin Gadkari
@nitin_gadkari

🇮🇳 भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के जनक, महान वैज्ञानिक 🇮🇳 पद्मभूषण डॉ. होमी जहांगीर भाभा जी की जयंती पर उन्हें सादर नमन।🙏

#डॉ_होमी_जहांगीर_भाभा
#DrHomiJehangirBhabha

Dr Mansukh Mandaviya
@mansukhmandviya

2 Crore+ Strong and Growing !

MY Bharat is uniting Yuva-Shakti to realise PM Modi's dream of a Viksit Bharat.

Arjun Ram Meghwal
@arjunrammeghwal

मंत्रिमंडल ने 8वें केंद्रीय वेतन आयोग की संदर्भ शर्तों (Terms of Reference) को मंजूरी दी है।

आयोग अपनी सिफारिशें 18 महीनों के भीतर प्रस्तुत करेगा।

#CabinetDecisions |
#8thPayCommission|@AshwiniVaishnaw

गगनयान मिशन के लिए डीआरडीओ ने विकसित किए विशेष खाद्य पदार्थ

नई दिल्ली, आइएएनएस : रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने 'गगनयान' मिशन के लिए विशेष भोजन और पैराशूट सिस्टम विकसित किए हैं। गगनयान मिशन में पृथ्वी की 400 किलोमीटर पर स्थित निम्नली कक्षा में तीन अंतरिक्षयात्रियों को भेजा जाएगा। इसके बाद पृथ्वी पर सुरक्षित वापसी कराई जाएगी। डीआरडीओ के इलेक्ट्रानिक्स और संचार महानिदेशक डा. बीके. दास ने बताया कि डीआरडीओ ने इन तकनीकों का सफल परीक्षण भी हो चुके है। उन्होंने कहा, हमने गगनयान मिशन के लिए आवश्यक विशेष खाद्य पदार्थ और पैराशूट के लिए विशेष प्रणाली विकसित की है। हमारे पास ऐसे विशेष तकनीक भी हैं जिन पर अंतरिक्ष यात्री निर्भर रह सकते हैं। उन्होंने कहा कि डीआरडीओ ने ऐसी कई तकनीकें विकसित की हैं जिनका उपयोग सशस्त्र बलों और अंतरिक्ष मिशनों — दोनों में किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि पहले और दूसरे चरण के परीक्षण प्रयोगशालाओं और बाहरी परिस्थितियों में किए गए हैं, जिनके परिणाम बेहद

छठ देश में एकता का सबसे सुंदर उदाहरण: मोदी

वंदे मातरम का

मरीनटाइम लीडर्स कॉन्क्लेव में बोले पीएम मोदी

देश का मरीनटाइम सेक्टर ग्रोथ का नया इंजन विकसित देशों से बेहतर हैं भारत के बंदरगाह

अंतर्देशीय जलमार्ग कार्गो में 700 प्रतिशत की वृद्धि

समुद्री दृष्टि ने 100 और नए संग्रहालय बनाए हैं

भारत का औसत कंटेनर समय 3 दिन कम हुआ

एजेंसी ▸▸ मुंबई

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को मुंबई में इंडिया मरीनटाइम लीडर्स कॉन्क्लेव 2025 को संबोधित किया। इस दौरान पीएम मोदी ने कहा कि 21वीं सदी के इस कालखंड में भारत का समुद्री क्षेत्र बड़ी तेजी और ऊर्जा के साथ आगे बढ़ रहा है। इसी के साथ उन्होंने यह भी कहा कि देश के बंदरगाह अब विकासशील देशों में सबसे कुशल बंदरगाहों में गिने जाते हैं।

▪ परिवहन जलमार्ग 3 से 42 हो गए

पीएम मोदी ने कहा कि साल 2025 भारत के मरीनटाइम सेक्टर के लिए बहुत अहम साल रहा है। इंडिया मरीनटाइम वीक 2025 कार्यक्रम में उपलब्धियों को गिनाते हुए पीएम मोदी ने कहा कि हाल ही विझिंजम बंदरगाह पहला गहरे पानी का अंतर्राष्ट्रीय केंद्र है, जिसका परिचालन शुरू हो गया है।

समुद्री क्षेत्र में सुधार, नए आधुनिक कानून लागू

भारतीय मरीनटाइम में निवेश करने का यही सही समय है

भारत के समुद्री क्षेत्र पर दुनिया को विश्वास

हरित हाइड्रोजन सुविधा शुरू

उपलब्धि | प्रधानमंत्री ने लिंक्डइन पोस्ट में भारत के समुद्री पुनर्जागरण पर रखे विचार, वैश्विक निवेशकों को तेजी से बढ़ते क्षेत्र में निवेश का दिया न्योता

भारत समुद्री क्षेत्र में निवेश का परफेक्ट हार्बर, विजन 2047 से बनेगा ग्लोबल लीडर : मोदी

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, भारत लंबी तटरेखा, विश्व स्तरीय बंदरगाहों व स्पष्ट नीतियों के कारण निवेश का परफेक्ट हार्बर बन चुका है। उन्होंने कहा, हमारे पास बहुत लंबी तटरेखा है। हमारे पास विश्वस्तरीय बंदरगाह हैं। बुनियादी ढांचा, नवाचार और इरादे हैं। विजन 2047 के दम पर भारत ग्लोबल लीडर बनेगा।

इंडिया मैरीटाइम वीक-2025 में भागीदारी के बाद लिंकडइन पर साझा पोस्ट में प्रधानमंत्री ने भारत के समुद्री पुनर्जागरण पर विचार रखे और वैश्विक निवेशकों को देश के इस तेजी से बढ़ते सेक्टर में निवेश के लिए आमंत्रित किया। पीएम ने कहा, 7,500 किलोमीटर से अधिक लंबी तटरेखा व वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बंदरगाहों के विस्तारित नेटवर्क के साथ, भारत एक प्रमुख समुद्री केंद्र बनने की ओर अग्रसर है। यह न सिर्फ कनेक्टिविटी बल्कि मूल्यवर्धित सेवाएं, हरित शिपिंग पहल और उद्योग अनुकूल नीतिगत ढांचे की पेशकश करेगा। पीएम मोदी ने बताया, पिछले एक दशक में उठाए गए बड़े कदमों ने इस क्षेत्र को पूरी तरह से बदल दिया है। पीएम मोदी ने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय निवेशकों को 'आओ भारत में निवेश करें' का आह्वान करते हुए कहा कि उनके लिए शिप-बिल्डिंग, बंदरगाह संचालन, लॉजिस्टिक्स और तटीय शिपिंग जैसे क्षेत्रों में अपार अवसर हैं। ब्यूरो

यूं हुई देश के समुद्री क्षेत्र की प्रगति

रिकॉर्ड क्षमता : प्रमुख बंदरगाहों की क्षमता दोगुनी होकर 276.2 करोड़ टन प्रति वर्ष हो गई है।

दक्षता सुधरी : जहाजों के टर्नअराउंड टाइम को 93 घंटे से घटाकर 48 घंटे कर दिया गया है। आज भारत के बंदरगाह विकासशील देशों में सबसे कुशल माने जाते हैं, कई मामलों में वे विकसित देशों से भी बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं।

कानूनी क्रांति : रिफॉर्म, परफॉर्म, ट्रांसफॉर्म के मंत्र पर चलते हुए एक सदी से भी अधिक पुराने औपनिवेशिक नौवहन कानूनों को बदलकर, 21वीं सदी के अनुरूप आधुनिक और भविष्योन्मुखी कानूनों को लागू किया गया है।

नाविकों की बढ़ती शक्ति : भारतीय नाविक कार्यबल 1.25 लाख से बढ़कर 3 लाख से अधिक हो गया है। आज भारत, दुनिया में प्रशिक्षित नाविकों का तीसरा सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है।

हरित दृष्टिकोण से वैश्विक नेतृत्व की तैयारी में देश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत के समुद्री विजन को सागर से महासागर की ओर बढ़ने वाला बताया, जो सुरक्षा, स्थिरता और आत्मनिर्भरता के तीन स्तंभों पर आधारित है। इसके चार प्रमुख स्तंभ इस प्रकार हैं।

▪ **ऐतिहासिक पैकेज व लक्ष्य :** सरकार ने जहाज निर्माण और समुद्री तंत्र को मजबूत करने के लिए 69,725 करोड़ के पैकेज को मंजूरी दी है। मैरीटाइम इंडिया विजन 2030 के तहत, भारत का लक्ष्य वैश्विक जहाज निर्माण उद्योग के शीर्ष-5 देशों में शामिल होना है।

▪ **हरित और आधुनिक भविष्य :** भारत ग्रीन मैरीटाइम फ्यूचर की ओर तेजी से बढ़ रहा है। विशाखापत्तनम बंदरगाह पर मेगा-वाट स्केल इंडीजीनस ग्रीन हाइड्रोजन फैसिलिटी की शुरुआत इसका प्रमाण है।

▪ **नए बंदरगाह :** भारत का पहला डीप वाटर इंटरनेशनल ट्रांसशिपमेंट हब विझिंजम पोर्ट शुरू। इसने दुनिया के सबसे बड़े कंटेनर वेसल का स्वागत किया।

▪ **वैश्विक संपर्क :** इंडिया-मिडिल ईस्ट-यूरोप इकोनॉमिक कॉरिडोर जैसी परियोजनाएं भारत को वैश्विक व्यापार का स्थिर प्रकाशस्तंभ बना रहा है।

गैर-यूरिया उर्वरकों पर 37,952 करोड़ की सबसिडी मंजूर

जनसत्ता ब्यूरो
नई दिल्ली, 28 अक्तूबर।

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने मंगलवार को चालू 2025-26 रबी सत्र के लिए गैर-यूरिया उर्वरकों फास्फोरस और सल्फर पर 37,952 करोड़ रुपए की सबसिडी को मंजूरी दी। हालांकि, नाइट्रोजन और पोटाश के

मंत्रिमंडल ने चालू रबी सत्र के लिए फास्फेट सबसिडी को 43.60 रुपए प्रति किलोग्राम से बढ़ाकर 47.96 रुपए प्रति किलोग्राम कर दिया है। नाइट्रोजन और पोटाश के लिए सबसिडी दर में बदलाव नहीं किया गया है।

करोड़ रुपए थी। उन्होंने बताया कि पोषक तत्व आधारित सबसिडी (एनबीएस) योजना के तहत सबसिडी दर आयात मूल्य और पोषक तत्वों की आवश्यकता, सबसिडी का बोझ और एमआरपी आदि जैसे अन्य कारकों को ध्यान में रख कर तय की गई है। सबसिडी दरें एक अक्तूबर से लागू होंगी। देश के कई हिस्सों में रबी (सर्दियों) की

50 लाख कर्मचारी और 69 लाख पेंशनर्स को मिलेगा लाभ, किसानों के लिए सस्ते होंगे उर्वरक

8वें केंद्रीय वेतन आयोग के टर्म्स ऑफ रेफरेंस को मंजूरी दी

हरिभूमि ब्यूरो ▸▸ नई दिल्ली

किसानों को होंगे ये लाभ

8वां वेतन आयोग: 18 महीने में देनी होगी सिफारिशें

इसी साल, जनवरी में केंद्र सरकार ने 8वें वेतन आयोग के गठन की घोषणा की थी। अब कैबिनेट ने इसके कार्यक्षेत्र व दायरे (टर्म्स ऑफ रेफरेंस) को अंतिम रूप दे दिया है। केंद्र सरकार ने यह फैसला विभिन्न मंत्रालयों, राज्य सरकारों और जॉइंट कंसल्टेटिव मशीनरी (जेसीएम) के कर्मचारी पक्ष से परामर्श के बाद लिया। आयोग को अपनी सिफारिशें 18 महीनों के भीतर सरकार को सौंपनी होंगी। इससे करीब 50 लाख केंद्रीय कर्मचारियों, जिनमें रक्षा बलों के कर्मचारी भी शामिल हैं, तथा 69 लाख पेंशनभोगियों को लाभ मिलेगा। सूत्रों के अनुसार, आयोग वेतन, भत्ते, पेंशन और अन्य भत्तों में सुधार से जुड़ी सिफारिशें करेगा। जाहिर है सिफारिशें लागू होते ही वेतन और पेंशन में बढ़ोतरी की संभावनाओं से इनकार नहीं किया जा सकता।

रबी सीजन 2025-26 के लिए

विकसित भारत यूथ लीडर्स डायलॉग 2.0 : प्रधानमंत्री ने युवाओं से किया राष्ट्र निर्माण में भागीदारी का आह्वान

हरिभूमि ब्यूरो ▸▸ नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के युवाओं से राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने की अपील की है। उन्होंने 'विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2.0' के शुभारंभ की जानकारी देते हुए कहा कि यह पहल युवाओं के लिए अपने विचारों, सुझावों और दृष्टिकोण को साझा करने का एक सुनहरा अवसर है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संदेश में कहा, "विकसित भारत यूथ लीडर्स डायलॉग 2.0 हमारे युवाओं के लिए एक बेहतरीन अवसर है, जिससे वे राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकें। हमारे युवाओं के विचार और अंतर्दृष्टियां विकसित भारत के निर्माण में नई दिशा दिखा सकती हैं।" उन्होंने यह भी बताया कि इस संवाद में भाग लेने का रास्ता एक विशेष क्विज प्रतियोगिता से होकर जाता है। उन्होंने सभी युवाओं से आग्रह किया कि वे इस प्रतियोगिता में हिस्सा लें और अपने विचारों के माध्यम से भारत के विकास में सहभागी बनें।

▸▸ शेष पेज 5 पर

क्या है विकसित भारत यूथ लीडर्स डायलॉग 2.0

'विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग 2.0' केंद्र सरकार की एक पहल है जिसका उद्देश्य युवाओं को नीति निर्माण और विकास प्रक्रिया से सीधे जोड़ना है। इसके तहत देशभर के छात्र, युवा पेशेवर और नवाचार में रुचि रखने वाले लोग अपनी भागीदारी दर्ज करा सकते हैं। इस संवाद के माध्यम से युवाओं के विचारों को नीतिगत योजनाओं में शामिल करने का प्रयास किया जाएगा।

21वीं सदी भारत और आसियान की, हमारे ऐतिहासिक-सांस्कृतिक रिश्ते : पीएम मोदी

कहा, आसियान भारत की एक्ट ईस्ट नीति का मुख्य स्तंभ ▪ आतंकवाद वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती

अमर उजाला ब्यूरो

विकसित भारत से मानवता को फायदा

भारत के पास देने के लिए बहुत कुछ : मार्कोस

स्थिरता और पारस्परिक समृद्धि को बढ़ावा : अनवर

24 नवंबर 2025 को 403वीं जयंती पर

कृतज्ञ राष्ट्र का नमन

वीर लाचित बरफुकन

भारत के वीरपुत्र

साहस, रणनीति और युद्ध कौशल से अहोम सेनापति वीर लाचित बरफुकन ने सरायघाट के युद्ध में विदेशी आक्रांताओं से असम की पवित्र संस्कृति और भूमि को सुरक्षित रखने का अद्भुत काम किया। वह आत्मनिर्भर सेना के प्रतीक भी थे जिन्होंने मुगलों की विशाल सेना को सीमित संसाधनों, वीरता और देशभक्ति के बल पर हराने का महान कार्य किया। भारत के महानतम सेनापति लाचित बरफुकन सिर्फ असम के ही नहीं बल्कि पूरे भारत के थे वीरपुत्र...

विरासत को दिया सम्मान

- केंद्र सरकार ने लाचित बरफुकन की विरासत को सम्मान दिया और 2022 में उनकी 400वीं जन्म जयंती पूरे उत्साह से राष्ट्रीय स्तर पर मनाई।
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 9 मार्च 2024 को जोरहाट में वीर लाचित बरफुकन की 125 फीट ऊंची विशाल और भव्य कांस्य प्रतिमा का अनावरण किया।
- उनकी जीवनी को 23 भाषाओं में प्रकाशित किया गया।
- साल 2023 के गणतंत्र दिवस परेड में असम की झांकी में महान अहोम सेनापति लाचित बरफुकन को दर्शाया गया था।
- राष्ट्रीय सुरक्षा अकादमी (**NDA**) में 1999 से बेस्ट कैडेट को लाचित बरफुकन गोल्ड मेडल दिया जाता है ताकि देश के सभी जांबाज जवान इस योद्धा से प्रेरणा ले सकें।

> **वीर लाचित बरफुकन का जीवन हमें देश के सामने उपस्थित कई वर्तमान चुनौतियों का डटकर सामना करने की प्रेरणा देता है। हमें प्रेरणा देता है कि हम व्यक्तिगत स्वार्थों को नहीं, देशहित को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। हमारे लिए परिवारवाद, भाई-भतीजावाद, नहीं बल्कि देश सबसे बड़ा होना चाहिए।**
>
> – नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

न्यू इंडिया समाचार पाक्षिक

आर.एन.आई, DELHIN/2020/78812, 16-30 नवंबर, 2025

आरएनआई DELHIN/2020/78812, दिल्ली पोस्टल लाइसेंस नंबर- DL (S)-1/3550/2023-25 डब्ल्यूपीपी संख्या- U (S)-98/2023-25, posting at BPC, Market Road, New Delhi - 110001 on 13-17 advance Fortnightly (प्रकाशन तिथि- 4 नवंबर 2025, कुल पृष्ठ-52)

प्रधान संपादक: धीरेन्द्र ओझा, प्रधान महानिदेशक, पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली

प्रकाशक और मुद्रक: कंचन प्रसाद, महानिदेशक, केंद्रीय संचार ब्यूरो

कमरा संख्या-278, केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना भवन, द्वितीय तल, नई दिल्ली- 110003 से प्रकाशित

मुद्रण: जेके ऑफसेट ग्राफिक्स प्रा. लि., बी-278, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज-1, नई दिल्ली-110020